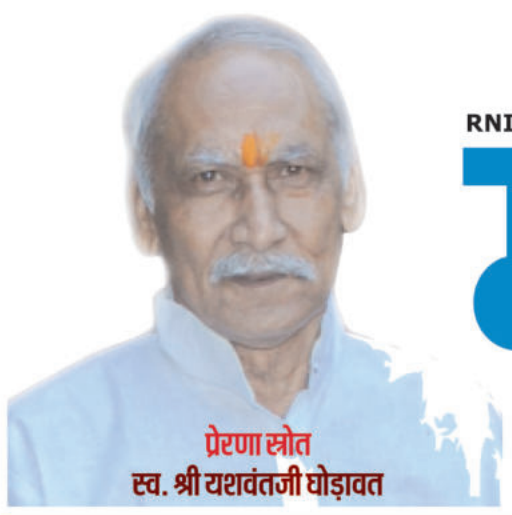

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

गलती होना प्रकृति है, मान लेना संस्कृति है, और सुधार कर लेना प्रगति है।

गोपाल दास गौर

वर्ष-08, अंक - 49 (साप्ताहिक) खवासा, गुरूवार 24 सितम्बर 2026 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

आधुनिक तकनीकी अंगूठे से फिंगरप्रिंट तक...

माही की गूंज,झाबुआ डेस्क।

संजय भटेवरा

विज्ञान भले ही कितनी ही उन्नति कर ले लेकिन हमारे पूर्वज उसका उपयोग पहले से ही करते आ रहे थे ये तथ्य विज्ञान आज भी स्वीकारता है। हर क्षेत्र में तकनीक के व्यापक उपयोग के बाद एक बार फिर यह बात महसूस की जा रही है कि, हमारे पूर्वज जो करते आए वही ठीक था। यानी घूम फिर कर वापस हम उन पुरानी पद्धति को ही अपनाना अच्छा समझते हैं तब यह प्रश्न उठना स्वाभिक ही है कि, फिर इतनी भाग दौड़ और मारामारी क्यों...? खेती में हम उर्वरकों की प्रचरुता के बाद वापस ऑर्गेनिक खेती की ओर लौट रहे हैं।

पहले अंगूठा लगाया जाता था अब रूप बदलकर फिंगरप्रिंट लगा रहे हैं। यानी घूम फिर कर वहीं। कुछ ऐसा ही मामला वर्तमान सरकार में भी चल रहा है सरकार लगातार कुछ नया करने की कोशिश करती है और फिर घूम फिर कर वहीं आकर ठहर जाती है। अगर यही सब करना था तो फिर इतनी मशक्कत क्यों...? नोटबंदी के बाद सरकार ने लगातार डिजिटल पेमेंट व्यवस्था को प्रोत्साहित किया और सरकार का यह कदम व्यापक रूप से सफल रहा। आज छोटे से छोटे गांव से लेकर बड़े शहरों तक में डिजिटल लेनदेन बड़ा है और लाखों करोड़ों का लेनदेन इस माध्यम से पूरे देश में प्रतिदिन होता है। नई व्यवस्था को लोगों ने व्यापक समर्थन दिया और सरकार का भी दावा था कि, डिजिटल लेनदेन से व्यापार- व्यवसाय में पारदर्शिता बढ़ती है और काले धन पर अंकुश लगता है। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था और डिजिटल लेनदेन बढ़ता ही जा रहा था कि, सरकार ने अचानक घोषणा कर दी की 2000 से ऊपर के व्यापारिक लेनदेन पर 0.4 प्रतिशत टैक्स लगेगा। सरकार की और से सफाई दी गई कि, 96 प्रतिशत लेनदेन 2000 से कम का होता है और यह टेक्स सिर्फ व्यापारिक लेनदेन पर पड़ेगा। व्यक्ति से व्यक्ति को किए गए ऑनलाइन पेमेंट पर कोई चार्ज नहीं लगेगा। सरकार का यह भी दावा है कि, इससे आम उपभोक्ता को नही, व्यापारी को टैक्स देना होगा।

लेकिन क्या यह संभव है कि, व्यापारी अपने हितों को त्याग कर ग्राहक को फायदा पहुंचाएगा...?

व्यापारी का एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना होता है ऐसे में क्या व्यापारी से यह अपेक्षा की जा सकती है कि, वो ऑनलाइन पेमेंट का शुल्क ग्राहक से नहीं वसूल करेगा...?

इस व्यवस्था में अंततः नुकसान आम व्यक्ति का ही होगा। ऐसे में हर आम आदमी सरकार से यही प्रश्न कर रहा है कि, अगर घूम फिर कर फिर नगद की ओर ही आना था तो फिर डिजिटल पेमेंट का इतना हो हल्ला क्यों किया गया...?

वहीं व्यापारियों ने भी इस व्यवस्था का विरोध करते हुए 23 सितंबर को जो यूपीआई डे मनाया जिसमें उन्होंने यूपीआई, स्कैनर और साउंड बॉक्स को काले कपड़े से ढककर अपना विरोध जताया। अधिकांश व्यापारियों का तर्क है कि, वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में पहले ही उनका मार्जिन कम होता जा रहा है और डेबिट कार्ड और क्रेडिट कार्ड पर चार्ज के साथ 18 प्रतिशत जीएसटी दे रहे हैं ऐसे में यह अतिरिक्त चार्ज उनके लिए घाटे का सौदा है। ऐसे में कई दुकानदारों ने बकायदा सूचना जारी कर दी है कि, यहां केवल नगद भुगतान ही करें यूपीआई से भुगतान स्वीकार नहीं होगा।

ऐसे में हर आदमी सरकार के इस कदम का विरोध ही कर रहा है। आम आदमी का कहना है कि, अंततः भार तो आम उपभोक्ता पर ही पड़ेगा। वहीं सरकार एक तरफ तो डिजिटल पेमेंट को प्रोत्साहित कर रही थी। वहीं इस फैसले से लोग वापस पुरानी व्यवस्था ही अपना रहे हैं। लोगों का कहना है कि, तकनीक भले ही अंगूठे से फिंगरप्रिंट तक पहुंच जाए लेकिन अंततः पुरानी व्यवस्था ही अपनाकर यह संदेश देना चाहती है कि,पुरानी व्यवस्था ही अच्छी थी।

वहीं सरकार की तरफ से वित्त मंत्री ने सरकार की ओर से अपना स्पष्टीकरण जारी किया है। जिसमें कहां गया है कि, एमडीआर का बोझ ग्राहक पर नहीं पड़ेगा यह न टैक्स है, न शेष है और न ही इसकी रकम भारत की संचित निधि में जाएगी। इसकी रकम बैंकों, भुगतान सेवा प्रदाताओं और यूपीआई एवं प्रदाताओं में बटेगी। वही सरकार ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया है कि, व्यक्ति से व्यक्ति भुगतान मुफ्त रहेगा 75 हजार या उससे अधिक के भुगतान पर इसकी अधिकतम सीमा 300 रुपए होगी। सरकार का दावा है कि, 96 प्रतिशत व्यापारिक भुगतान इससे अप्रभावित रहेगा। कुछ श्रेणियां के लिए दरे अलग तय की गई है रेलवे, ईंधन, कृषि सामग्री, टेलीकॉम, बीमा, सरकारी बिल और शिक्षा के भुगतान में 2 हजार रुपए से अधिक के लिए 5 रुपए शुल्क देना निर्धारित है। ऐसे में कौन ऐसा होगा जो यह अतिरिक्त शुल्क देना चाहेगा। लोगों का कहना है कि, व्यापारी तो टैक्स की राशि समायोजित करके ग्राहकों से ही वसूल करेगा और ग्राहक की जेब पर अतिरिक्त भार न पड़े इसलिए ग्राहक नगद लेनदेन करना पसंद करेगा। इसलिए इस व्यवस्था का व्यापारी के साथ ही आम नागरिक भी विरोध कर रहा है।

राम मंदिर चढ़ावा चोरीः हजारों पन्नों का आरोप पत्र दाखिल

अयोध्या।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में विशेष जांच दल ने आठ आरोपियों के खिलाफ 7 हजार पन्नों से अधिक का आरोप पत्र भ्रष्टाचार निवारण न्यायालय में दाखिल किया है। जांच अधिकारी बुधवार को बड़े बक्सों में दस्तावेज लेकर न्यायालय पहुंचे। आरोप पत्र के साथ बैंक खातों के विवरण, जमा पर्चियां और जांच से जुड़े अन्य दस्तावेज भी शामिल किए गए हैं।

आरोप पत्र में 173 गवाहों के बयान दर्ज किए गए हैं। जांच में चढ़ावे की रकम से जुड़ी 105 अनियमितताओं का उल्लेख किया गया है। जांच के दौरान 803 वस्तुओं का हिसाब सही पाया गया, जबकि 86 कीमती वस्तुओं की रसीद नहीं मिलने की बात सामने आई है।

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से कार, आभूषण और 79.85 लाख रुपए नकद बरामद किए थे। आरोप पत्र में बरामदगी के साथ आरोपियों के बैंक खातों में जमा ऐसी रकम का भी विवरण दिया गया है, जिसका स्पष्ट स्रोत जांच में सामने नहीं आया। चोरी की रकम से खरीदी या बनाई गई चल-अचल संपत्तियों का ब्योरा भी दस्तावेजों में शामिल किया गया है।

मामले की जांच उत्तर प्रदेश पुलिस के पुलिस महानिरीक्षक किरण एस. के नेतृत्व में गठित विशेष जांच दल ने की। जांच के दौरान मंदिर के तीर्थयात्री सुविधा केंद्र के गणना कक्ष की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग और अन्य डिजिटल साक्ष्यों की जांच की गई। जांच दल के अनुसार, गणना प्रक्रिया से जुड़े कुछ लोगों की मिलीभगत से कक्ष से नकदी को कथित तौर पर निकालने या छिपाने के 105 मामले सामने आए।

इस मामले में पहले हुई उच्चतम न्यायालय की सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने न्यायालय को बताया था कि विशेष जांच दल आरोप पत्र दाखिल करेगा। अब आरोप पत्र दाखिल होने के बाद मामले में आगे की न्यायिक प्रक्रिया शुरू होगी।

आरोप पत्र में राम मंदिर ट्रस्ट के पूर्व महासचिव चंपत राय और सदस्य डॉ. अनिल मिश्रा के नाम शामिल नहीं किए गए हैं। इसे लेकर मामले से जुड़े कुछ अधिवक्ताओं ने असंतोष जताया है।

कांग्रेसः चुनाव आयोग ने किया देशद्रोह का काम

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को पद से हटाने की मांग की है। राहुल गांधी ने एक वीडियो साझा कर चुनाव आयोग के अधिकारियों को चेतावनी भी दी। कांग्रेस के अन्य नेताओं ने भी ज्ञानेश कुमार को हटाने की मांग की है। यह विवाद उन खबरों के बाद बढ़ा है, जिनमें दावा किया गया कि चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने पिछले 10 महीनों में आयोग के कुछ फैसलों पर 14 बार आपत्ति दर्ज कराई। इनमें मतदाता सूची में नाम जोड़ने-हटाने, नए मतदाताओं के पंजीकरण और मतदाता आंकड़ों से जुड़े मामले शामिल हैं। हालांकि, चुनाव आयोग ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा है कि विशेष गहन पुनरीक्षण सहित सभी फैसले मुख्य चुनाव आयुक्त और दोनों चुनाव आयुक्तों की मंजूरी से सर्वसम्मति से लिए गए हैं।

कैबिनेट मंत्रियों-प्रधानमंत्री का चिंतन शिविर

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार 23 सितंबर से केंद्रीय कैबिनेट मंत्रियों के साथ दो दिवसीय चिंतन शिविर करेंगे। नई दिल्ली स्थित सेवा तीर्थ में होने वाला यह शिविर 24 सितंबर तक चलेगा। बैठक में सरकार के अब तक के कामकाज की समीक्षा के साथ आगामी योजनाओं और प्राथमिकताओं पर मंथन किया जाएगा। इस बार चिंतन शिविर में केवल कैबिनेट मंत्रियों की भागीदारी होगी। इससे पहले प्रधानमंत्री राज्य मंत्रियों और स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्रियों के साथ अलग-अलग बैठकें कर चुके हैं। इन बैठकों के बाद अब कैबिनेट स्तर पर होने वाला यह विचार-विमर्श सरकार की कार्यप्रणाली और आगे की दिशा को लेकर महत्वपूर्ण माना जा रहा है। सरकारी सूत्रों के मुताबिक बैठक में मौजूदा योजनाओं की प्रगति, उनके प्रभावी क्रियान्वयन और आम लोगों तक सरकारी सेवाओं की पहुंच की समीक्षा की जाएगी। इसके अलावा विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वय बढ़ाने और प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने के उपायों पर भी चर्चा होगी।

उदघाटन के बाद से ही लगातार दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे वाहनों पर हो रही पत्थरबाजी

झाबुआ-रतलाम प्रशासन और एनएचएआई घटनाएं रोकने में नाकाम, हर बार सिर्फ योजनाएं, मगर पत्थरबाजी की घटनाएं बेलगाम

माही की गूंज, झाबुआ।

भारत माला परियोजना के अंतर्गत जब दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे के निर्माण की घोषणा 8 मार्च 2019 को केंद्रीय सड़क परिवहन और राज्यमार्ग मंत्री नितिन गडकरी द्वारा की गई थी। इस एक्सप्रेस वे की कुल लंबाई लगभग 1350 किलोमीटर और लागत करीब 1 लाख करोड़ है। यह 8 लेन एक्सप्रेस वे भारतमाला परियोजना के पहले चरण का एक मुख्य और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका निर्माण भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है। यह देश के नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइप लाइन और पीएम गति शक्ति मास्टर प्लान का भी एक प्रमुख हिस्सा है। यह 8 लेन एक्सप्रेस वे 6 राज्यो और केंद्र शासित प्रदेशों जैसे दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र से होकर गुजरता है। बताया जाता है कि, इस एक्सप्रेस वे के बन जाने के बाद दिल्ली से मुंबई का सफर 24 घंटे के बजाय मात्र 12 घंटों में ही पूरा हो जाएगा।

इस भारतमाला परियोजना के अंतर्गत बनने वाले 8 लेन एक्सप्रेस वे की घोषणा के बाद लोगों में काफी उत्साह देखने को मिला था। मध्यप्रदेश में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे के हिस्से को बिना किसी औपचारिक उद्घाटन समारोह के 21 सितंबर 2023 को सुबह 8 बजे से आम जनता के लिए खोल दिया गया था। इस हिस्से को खोलने की अनुमति प्रधानमंत्री कार्यालय के संदेश के आधार पर दी गई थी, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का औपचारिक उद्घाटन कार्यक्रम तय नहीं हो पाया था। वहीं, देश में इस एक्सप्रेसवे के पहले चरण (दिल्ली-दौसा-लालसोट खंड) का आधिकारिक उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 12 फरवरी 2023 को राजस्थान के दौसा से किया गया था। मध्यप्रदेश में इस 8 लेन एक्सप्रेस वे की कुल लंबाई 244 किलोमीटर है। मध्यप्रदेश में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे राज्य की पश्चिमी सीमा पर स्थित झाबुआ जिले के थांदला/अनास नदी (गुजरात सीमा के पास) से प्रवेश करता है और मंदसौर जिले के गरोठ/भानपुरा (राजस्थान सीमा) तक जाता है। प्रदेश के जिलों में इसकी लंबाई झाबुआ जिले में 50.5 किलोमीटर, रतलाम जिले में 91.1 किलोमीटर तो मंदसौर जिले में 102.8 किलोमीटर है। यह एक्सप्रेस वे थांदला, सैलाना, जावरा, रतलाम, गरोठ और भानपुरा तक जाता है। इस एक्सप्रेस वे पर चढ़ने और उतरने के लिए कुल 8 जंक्शन बनाए गए है।

इस एक्सप्रेस वे के मध्यप्रदेश क्षेत्र में उदघाटन के बाद लोगों में इसे लेकर काफी उत्साह और उम्मीदें दिखाई दे रही थी। भारी भरकम टोल के बावजूद लोग इस पर सफर कर अपना कीमती समय बचा रहे थे। लेकिन 21 सितम्बर 2023 यानि एक्सप्रेस वे के उदघाटन के बाद से ही रतलाम-झाबुआ क्षेत्र में इस पर सफर करने को लेकर असुरक्षा का भाव दिखाई देने लगा। एक्सप्रेस वे के नियमों के साथ मध्यप्रदेश के इस हिस्से में काफी ज्यादा अनियमितताएं देखने को मिल रही है। प्रतिबंधात्मक दो पहियां और चार पहियां वाहन भी इस एक्सप्रेस वे पर आसानी से देखे जा सकते है। जो 8 लेन पर हो रही दुर्घटनाओं का मुख्य कारण भी है। जिन ग्रामीण क्षेत्रों से यह 8 लेन एक्सप्रेस वे निकल रहा है वहां ग्रामीणों ने खुद ही इस एक्सप्रेस वे पर चढ़ने और उतरने के रास्ते बना लिए है। उदघाटन के बाद से ही लगातार इस एक्सप्रेस वे पर एक तरफ दुर्घटनाओं का ग्राफ लगातार गंभीर स्थिति में बढ़ता दिखाई दे रहा है। अब तक कई लोगों की जानें इस एक्सप्रेस वे पर जा चुकी है। तो दूसरी ओर इस एक्सप्रेस वे पर चलने वाले चार पहियां वाहन लगातार शरारती तत्वों द्वारा की जा रही पत्थरबाजी का शिकार होते रहे है और यह क्रम बदस्तूर अब भी जारी है।

एनएचएआई इस एक्सप्रेस वे पर चल रहे लोगों की सुरक्षा को लेकर बिल्कुल भी गंभीर दिखाई नहीं दे रहा है। 8 लेन एक्सप्रेस वे पर हो रही घटनाओं की कई शिकायत, यात्रियों ने एनएचएआई को भी की है, लेकिन इन शिकायतों पर कोई गंभीर एक्शन देखने को नहीं मिला है। सितम्बर 2023 से लेकर अब तक इस एक्सप्रेस वे पर जितनी भी पत्थरबाजी की घटनाएं हुई है वह रिकार्ड में दर्ज है। लेकिन इसे रोकने के कोई ठोंस उपाय अब तक ना एनएचएआई कर पाया है और ना ही जिन क्षेत्रों व जिलों में यह घटनाएं हो रही है वहां का प्रशासन या पुलिस..? हालांकि मध्यप्रदेश से गुजर रहे इस 8 लेन एक्सप्रेस वे पर पत्थरबाजी की अधिकतर घटनाएं झाबुआ और रतलाम जिला क्षेत्र में ही हुई है। बावजूद इसके रतलाम और झाबुआ जिला प्रशासन या दोनों जिलों की पुलिस एक्सप्रेस वे पर हो रही पत्थरबाजी की घटनाओं को रोकने में नाकाम ही साबित हो रही है।

फोटो खिंचाओ प्रयास

ऐसा नही है कि एक्सप्रेस वे पर होने वाली घटनाओं की जानकारी दोनों ही जिला प्रशासन या पुलिस को नहीं हो। एक्सप्रेस वे पर हो रही पत्थरबाजी की घटनाओं और शिकायतों को लेकर दोनों ही जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन सजग तो है, हर घटना के बाद एक नई कार्य योजना तैयार की जाती है। लेकिन एक्सप्रेस वे पर हो रही पत्थरबाजी है कि रूकने का नाम नहीं ले रही है। झाबुआ क्षेत्र में एक्सप्रेस वे के उदघाटन के बाद जब-जब दुर्घटना हुई है तब-तब पुलिस और प्रशासन ने सुरक्षा के नाम पर एक नई योजना तैयार की है। योजना लागू करने के नाम पर उदघाटन जैसे आयोजन भी किए और फोटो भी खिंचवाएं है। इसके लिए बकायदा मीडिया को बुलाकर इसे प्रसारित भी किया और फोटो भी छपवाए है। शुरूआती दौर में इस इस एक्सप्रेस वे पर पत्थरबाजी हुई तो जिला प्रशासन और पुलिस ने हाइवे को क्रास करने वाले पुल पुलियाओं पर लगभग 8 से 10 फिट तक की लोहे की जालियां लगाई और मीडिया से इसे प्रसारित करवा कर अधिकारियों ने अपनी फोटो भी छपवाई। मगर जिला प्रशासन और पुलिस की यह पत्थरबाजी रोकने की योजना लगभग विफल ही साबित हुई और पत्थरबाजी की घटनाओं में कोई खास फर्क दिखाई नहीं दिया। लोग वैसे ही पत्थरबाजी का शिकार होते रहे। जिला प्रशासन और एनएचएआई भी माथा उतारनी करते दिखाई दिए।

इसके बाद जिला प्रशासन और पुलिस ने 8 लेन पर गश्त शुरू की लेकिन इसका भी कोई खास फर्क शरारती तत्वों और पत्थरबाजों पर नजर नहीं आया। इसके बाद पुलिस और प्रशासन ने धूम धड़ाके से ड्रोन कैमरे से निगरानी की शुरूआत की। जिले की पेटलावद विधायक और प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री निर्मला भूरिया से ड्रोन कैमरे से निगरानी का उदघाटन करवाया गया। अधिकारियों ने खूब फोटो खिंचवाए और मीडिया में ड्रोन कैमरे से निगरानी को एक्सप्रेस वे की निगरानी का सार्थक कदम बताया गया। मगर नतीजा अब भी वही ढाक के तीन पात ही साबित होता नजर आया।

रात्री के समय होती 8 लेन एक्सप्रेस वे पर पत्थरबाजी

अब पिछले कुछ माह से एक्सप्रेस वे पर हो रही पत्थरबाजी ने आतंक का रूप ले लिया है और लगातार रात के समय एक्सप्रेस वे से गुजरने वाले चार पहियां वाहनों को निशाना बनाया जा रहा है। वाहनों के कांच फूटने, वाहनों में नुकसान होने के साथ-साथ वाहनों में बैठे यात्री और चालक अब इन घटनाओं से गंभीर घायल होते नजर आ रहे है।

19 सितम्बर की रात्री को एक्सप्रेस वे पर हुई घटना ने प्रशासन के सारे प्रयासों की पोल एक बार ओर खोलकर रख दी है। इस रात कई वाहनों के कांच पत्थरबाजों ने फोड़े। इस घटना में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल भी हुआ। अब प्रशासन और पुलिस इस घटना के बाद फिर से अपनी ढपली अपना राग गाता हुआ नजर आ रहा है।

दिन दहाड़े पत्थरबाजी का वायरल वीडियो

रात्री में हो रही घटनाओं के बाद अब पिछले दो-तीन दिनों से सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल चल रहा है। जिसमें दिन के उजाले में एक्सप्रेस वे पर पत्थरबाजी करते पत्थरबाज दिखाई दे रहे है। वीडियों में साफ दिखाई दे रहा है कि, 8 लेन एक्सप्रेस वे के करीब कटी हुई पहाड़ी से एक युवक पत्थर मारता नजर आ रहा है। माही की गूंज इस बात की पुष्टि नही करता कि, यह वीडियो कितना पुराना और 8 लेन पर किस क्षेत्र का है, लेकिन वीडियो बनाने वाले ने इसे थांदला के टिमरवानी एंटर पाइंट से 10 या 12 किलोमीटर दूर का बताया है। सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे इस वीडियो को लेकर पुलिस का अपना नजरिया है। थांदला पुलिस ने इस वीडियो को प्रथम दृष्टिया अपने क्षेत्र का मानने से इंकार कर दिया है और वीडियो में दिख रहे स्थान की पुष्टी करने की बात कही है। कार से बनाई गई इस वीडियो में दिखाई दे रहा है कि, कटी पहाड़ी से एक व्यक्ति कार के आगे चल रहे वाहन पर पत्थर बरसा रहा है। वहीं पुलिस का कहना है कि, एक्सप्रेस वे पर कई जगह इस तरह की पहाड़ियां कटी हुई है जिनमें से कुछ रतलाम क्षेत्र में है तो कुछ झाबुआ क्षेत्र में आती है। वीडियो पुराना भी लग रहा है, इसकी जांच कर सही स्थान की पुष्टि करवाई जा रही है।

कुल मिलाकर बात इतनी सी है कि, सितम्बर 2023 से शुरू हुए इस एक्सप्रेस वे को लगभग 3 साल हो चुके है। मगर इस बात की गारंटी अब तक कहीं से भी नही मिली है कि, इस एक्सप्रेस वे पर सफर करना कितना सुरक्षित है...? क्योंकि उदघाटन के बाद से ही एक्सप्रेस वे पर पत्थरबाजी की घटनाएं हो रही है। इधर झाबुआ-रतलाम जिले की प्रशासन और एनएचएआई एक्सप्रेस वे पर हो रही इन पत्थरबाजी की घटनाओं को रोकने में लगातार नाकाम ही साबित हो रहे है...?

अब तेजा दशमी पर भी ग्रहण लगाने का प्रयास...?

माही की गूंज, खवासा। सुनिल सोलंकी

शरारती तत्वो ने मचाया तेजा दशमी पर उत्पाद, पुलिस ने बमुश्किल किया तितर-बितर

एक समय में झाबुआ जिले का यह खवासा गांव महावीर मवेशी मेले के नाम से मध्य प्रदेश ही नहीं बल्कि राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र तक अपनी पहचान बनाए रखता था। लेकिन शरारती तत्वों के चलते तेजा दशमी से प्रारंभ होकर भादवासुदी पूनम तक छह दिवसीय इस मेले पर ग्रहण लगा दिया। और खवासा में लगने वाला यह महावीर मेला आज महज इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह गया है। मेले के दौरान शरारती तत्वों द्वारा व्यापारियों से मारपीट, चोरी, खेतों की खड़ी फसल को नुकसान पहुंचाना, महिलाओं के साथ बदसलूकी आदि कृत्य किए जाते थे। वहीं एक घटना यह भी रही कि, मेले में सुरक्षा बल हेतु तैनात एक घुड़सवार के घोड़े को पिन चुभो दी जिसके चलते घोड़ा बिदक गया और घुड़सवार के गिरने से उसकी मौत हो गई थी। इन सभी शरारती तत्वों के चलते ही खवासा के प्रसिद्ध महावीर मेले पर प्रतिबंध लगा दिया और वह आज इतिहास के पन्नों में गुम हो गया। वही लगता है इन शरारती तत्वों को अब एक दिवसीय तेजाजी पर्व पर लगने वाले विशेष बाजार पर भी ग्रहण लगाने का कुनियोचित प्रयास किया जा रहा है। बता दे कि, मेले के बंद होने के बाद भी खवासा में तेजा दशमी पर श्रद्धालुओं की अटुट श्रद्धा है और इस अवसर पर खवासा तेजाजी मंदिर पर जिले के साथ गुजरात एवं राजस्थान जिले के लोग यहां बड़ी संख्या में दर्शन करने हेतु पहुंचते हैं। तथा सालभर में जिसे भी जहरीले जानवर के काटने के बाद तेजाजी के नाम से बांधी गई ताती को कटवाने खवासा के तेजाजी मंदिर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। इसी दौरान खवासा में प्रसादी दुकानों के साथ खेल खिलौने एवं अन्य व्यापार करने वाले बाहरी व्यापारी भी खवासा में आते हैं। जिसके चलते खवासा एक दिवसीय मेले के रूप में तेजा दशमी पर्व पर तब्दील हो जाता है। पुलिस व प्रशासन की भी इस अवसर पर पर्याप्त एवं माकूल व्यवस्था की जाती है। लेकिन शरारती तत्व इस पर्व के दौरान भी अपनी करतूत बताने में पीछे नहीं रह रहे हैं।

सोमवार को भी तेजा दशमी पर्व पर खवासा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे एवं पूरी तरह से मेले के रूप में तब्दील हुआ खवासा शांत वातावरण में था कि, थोड़ी भीड़ कम होते ही, शरारती तत्वों ने अपने आतंक का ऐसा ग्रहण लगाया कि, खवासा व क्षेत्र को कहीं न कहीं एक बार फिर शर्मसार होना पड़ा। शरारती तत्वों ने अकारण ही आतंक फैलाया और आपसी में जमकर मारपीट की व एक-दो व्यक्ति को अधमरा तक करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पुलिस ने बिच-बचाओं कर शरारती तत्वो को बमुश्किल से तितर-बितर किया। उक्त मारपीट का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है और खवासा तेजा दशमी पर ग्रहण लगाकर यह शरारती तत्व खवासा व क्षेत्र को शर्मसार भी कर रहे हैं।

गणेश जी का पारिजात पुष्प से सहस्त्र पुजन

माही की गूंज, बरवेट/बनी।

श्रीकृष्ण कामधेनु गौशाला बनी में दस दिवसीय गणेशोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री सिद्धि विनायक श्री गणेश जी का पारिजात पुष्प से सहस्त्र पूजन अर्चन किया। श्री हरिहर आश्रम बनी के पीठाधीश्वर पूज्य गुरुदेव आचार्य डॉ. देवेन्द्र जी शास्त्री की पावन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से श्री सिद्धि विनायक गणेश जी का पारिजात पुष्प द्वारा 1000 नामों से सहस्त्र अर्चन श्रद्धा, भक्ति और दिव्य भाव के साथ संपन्न किया गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री शास्त्री ने बताया कि, यह आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भगवान गणेश के हजारों दिव्य नामों का स्मरण, हजारों पुष्पों के माध्यम से हजारों भावों का समर्पण और अपने जीवन को प्रभु के चरणों में अर्पित करने का एक सुंदर आध्यात्मिक अवसर है।

सहस्त्र अर्चन का अर्थ

आचार्य श्री ने बताया कि, सहस्त्र अर्थात् एक हजार, भगवान गणेश के सहस्त्र नामों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक नाम के साथ पुष्प अर्पित करना सहस्त्र अर्चन कहलाता है। भगवान के हजार नाम केवल हजार शब्द नहीं होते।

हर नाम भगवान के किसी विशेष गुण, शक्ति, स्वरूप या दिव्य तत्व का स्मरण कराता है। जब भक्त एक-एक नाम बोलता है और एक-एक पुष्प भगवान को अर्पित करता है, तब वह अपने मन को बार-बार भगवान के किसी न किसी दिव्य गुण से जोड़ता है। जेसे एक नाम कृ एक स्मरण, एक पुष्प कृ एक समर्पण, एक मंत्र कृ एक प्रार्थना, एक अर्चन कृ एक शुभ संकल्प और जब ऐसे हजार अर्चन होते हैं, तो भक्त का मन बार-बार भगवान के स्वरूप और गुणों में स्थिर होता है।

जल झूलनी ग्यारस पर श्री-कृष्ण की शोभायात्रा

माही की गूंज, भामल। जल झूलनी ग्यारस के अवसर पर गांव में धार्मिक उल्लास का माहौल रहा। मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण की विशेष पूजा-अर्चना एवं अभिषेक किया गया। इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण की आकर्षक झांकी एवं शोभायात्रा निकाली गई। मंदिर परिसर एवं प्रमुख मार्गों पर आकर्षक सजावट की गई। आयोजन में बड़ी संख्या में महिला-पुरुष एवं बच्चे शामिल हुए। जल झूलनी ग्यारस पर भगवान को जल विहार कराने की परंपरा है। इसी धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान की प्रतिमा को जलाशय तक ले जाकर पूजा-अर्चना की गई। और विधि-विधान से जल विहार कराया गया। पहली फसल होने से मक्का व ककड़ी भेट की गईं।

धूमधाम से मनाई गई तेजा दशमी

माही की गूंज, करवड़।

ग्राम में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी तेजा दशमी का पर्व बड़े धूमधाम श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। तेजा दशमी के अवसर पर सुबह शुभ मुहूर्त में दोनों मंदिरों से निशान यात्रा निकाली गई। यह यात्रा पूरे नगर मैं घूमते हुए तेजाजी मंदिर पर पहुंची। इसके पश्चात तेजाजी मंदिर पर भक्तों का तांता लगा रहा भक्तों के द्वारा मंदिर पर विधि विधान से पूजा अर्चना कर अपने परिवार की सुख समृद्धि की कामना की। तेजा दशमी की मान्यता है कि जहरीले जीव जंतुओं को काटने पर तेजाजी महाराज के नाम से धागा बांधा जाता है। जिसे ग्रामीण क्षेत्र में ताती का धागा भी कहा जाता है, इसी परंपरा के अंतर्गत किसी को जहरीले जानवर ने अगर काट लिया है तो वह आज के दिन तेजा दशमी पर ताती का धागा खोलकर अपनी श्रद्धा एवं आस्था प्रकट करते हैं एवं मंदिर पर सर झुका कर तेजाजी महाराज को नमन करते हैं। करवड़ बस स्टैंड पर स्थित तेजाजी मंदिर पर तेजाजी महाराज के नाटक खेल का आयोजन हुआ मंदिर पर रात जागरण की गई। मंदिर समिति के द्वारा आयोजन को सफल बनाने में दिन-रात मेहनत की एवं आयोजन को सफल बनाया। खेल मैदान पर अखाड़े का आयोजन भी हुआ जिसे देखने के लिए आसपास के ग्रामीणों की भारी भीड़ उमड़ी कार्यक्रम के समापन में तेजा महाराज की आरती उतारी गई एवं प्रसादी का वितरण किया गया। इस आयोजन को सफल बनाने में पुलिस चौकी प्रभारी प्रहलाद सिंह चुंडावत ने अपने दलबल के साथ मोर्चा संभाला एवं आयोजन को सफल बनाया।

चिड़िया घर ग्रुप गणेश समिति पर होगी खाटू श्याम भजन संध्या

माही की गूंज, बामनिया।

गांव में गणेश उत्सव की धूम मची हुई है कई जगह गणेश जी के पंडाल लगे है और सभी जगह विभिन्न आयोजन हो रहै है। पेटलावद रोड स्थित चिड़िया घर ग्रुप, द्वारा लगाए गए गणेश पांडाल में प्रतिदिन आकर्षक और रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है, जो पूरे गांव में चर्चा का विषय बना हुआ है। आयोजकों द्वारा विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए मनोरंजन और प्रतिभा प्रदर्शन का मंच तैयार किया गया है।

गणेश पंडाल में पिछले दिनों से प्रतिदिन शाम को छोटे-छोटे बच्चों के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में चिड़िया घर में डांस प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने फिल्मी और भक्ति गीतों पर एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं। बच्चों के मनमोहक डांस को देखकर पंडाल में मौजूद दर्शकों ने तालियों से उनका उत्साहवर्धन किया। अभिभावकों के लिए यह पल गर्व से भरा रहा। आयोजक समिति ने सभी प्रतिभागी बच्चों को पुरस्कृत भी किया।

मंगलवार को दिखाई गई हनुमान अंश मूवी

चिड़ियाघर ग्रुप द्वारा मंगलवार को पंडाल में बाबा नीब करौली की जीवन पर बनी हनुमान अंश का बड़े पर्दे पर प्रशारण किया गया। आयोजकों ने बताया कि, यह फिल्म विशेष रूप से भक्तों के लिए लगाई गई हे। जिसमें हनुमान जी के अंश और उनकी लीलाओं को दिखाया गया है। इस फिल्म को देखने के लिए स्थानीय लोगों के साथ-साथ गांव के समस्त भक्त बड़ी संख्या में पंडाल में पहुंचें।

आज भजन संध्या

चिड़िया घर ग्रुप गणेश उत्सव के रूप में आज गुरुवार को पंडाल में विशाल खाटू श्याम भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। आयोजकों के अनुसार इस भजन संध्या में बाहर से प्रसिद्ध भजन गायक कलाकारों को आमंत्रित किया गया है, जो बाबा खाटू श्याम के भजनों से पूरी रात बामनिया को भक्तिमय बना देंगे।

भजन संध्या को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। पंडाल को आकर्षक लाइटों और फूलों से सजाया जा रहा है। भक्तों के बैठने और प्रसादी की भी विशेष व्यवस्था की जा रही है।

चिड़ियाघर ग्रुप के सभी युवा कार्यकर्ता दिन-रात मेहनत कर कार्यक्रम को सफल बनाने में जुटे हैं। ग्रुप के सदस्यों ने बताया कि, उनका उद्देश्य गणेश उत्सव के माध्यम से गांव में भक्ति के साथ-साथ सामाजिक समरसता और बच्चों की प्रतिभा को मंच देना है।

साथ ही गांव में महादेव मित्र मंडल, ब्रदर्स ग्रुप, मामा बालेश्वर गणेश ग्रुप इन सभी झाकियों पर प्रतिदिन विभिन्न आयोजन किए जा रहे है।

उल्लास के साथ मना राधा अष्टमी पर्व

माही की गूंज, पेटलावद।

राधा-कृष्ण का प्रेम कोई लौकिक या सांसारिक आकर्षण नहीं है, बल्कि यह जीवात्मा और परमात्मा के अनन्य मिलन का उच्चतम स्वरूप है। इस दिव्य प्रेम में कामवासना का रत्ती भर भी स्थान नहीं है। यह तो केवल निश्छल भक्ति मार्ग पर चलने वाले परम साधकों को प्राप्त होने वाला ईश्वरीय उपहार है। राधा और कृष्ण दो अस्तित्व नहीं बल्कि एक ही रूप हैं, जो संसार के बंधनों को छोड़कर भगवान को प्राप्त करने का मार्ग दिखाते हैं। दामोदर उत्सव समिति और श्री जी पथ सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में दामोदर कॉलोनी में राधा अष्टमी के पावन पर्व पर कथा प्रवक्ता सुश्री वैष्णवी भट्ट ने कही।

दामोदर कालोनी के गणेश पंडाल में आयोजित इस प्राकट्य उत्सव में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर दिव्य आध्यात्मिक लाभ अर्जित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश की भव्य आरती के साथ हुआ, जिसके पश्चात आयोजन समिति द्वारा मुख्य वक्ता परम विदुषी सुश्री वैष्णवी भट्ट का भावभीना स्वागत व अभिनंदन किया गया।

राधा अष्टमी के इस पावन प्रसंग के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने बताया कि, भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को बरसाना में कीर्ति कुमारी के यहाँ साक्षात् ह्लादिनी शक्ति राधा जी का प्राकट्य हुआ था। सनातन परंपरा में यह दिन पूर्ण समर्पण, भक्ति और प्रेम के प्राकट्य का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि बिना राधा रानी की कृपा और आराधना के भगवान कृष्ण की भक्ति अधूरी रहती है, इसलिए भक्त इस दिन व्रत रखकर उनके दिव्य स्वरूप की वंदना करते हैं।

निकाली निशान यात्रा

माही की गूंज, सारंगी।

भादवा माह की बड़ी तेजा दशमी के अवसर पर श्री वीर तेजाजी महाराज का पर्व श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। नवमी की रात को तेजाजी मंदिर पर कथा का आयोजन रखा गया।

भैरवनाथ बस स्टैंड पर रविवार रात में तेजाजी महाराज के नाटक का आयोजन रखा गया। इस नाटक को देखने के लिए आसपास के ग्रामीण क्षेत्र से भी लोगों ने पहुंच कर नाटक का आनंद लिया। सोमवार को ढोल ताशे के साथ निशान यात्रा का चल समारोह निकाला गया। यात्रा में अखाड़े वालों ने अपने करतब दिखाए।

एकादशी पर निकली सामूहिक ढोल यात्रा

माही की गूंज, सारंगी।

नगर में मंगलवार को जल झूलनी एकादशी श्रद्धा भक्ति और उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर सामूहिक ढोल यात्रा निकाली गई। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने जगह-जगह भगवान की पूजा अर्चना कर स्वागत किया। यात्रा का शुभारंभ शाम 4 बजे सदर बाजार राधा कृष्ण मंदिर से हुआ इस दौरान सीताराम मंदिर, सरकारी मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर, नर्वदेश्वर महादेव मंदिर, अंबे माता जी मंदिर की ढोल यात्रा में शामिल हुई। सभी ढोल में भगवान लड्डू गोपाल की मनमोहन प्रतिमा विराजीत थी। ढोल यात्रा प्रमुख मार्गों से निकाली गइ। ढोल यात्रा ग्राम भ्रमण के बाद रतलाम रोड नदी पर पहुंची यहां पर सभी मंदिरों की ढोल की सामूहिक आरती की गई उसके बाद श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरण की गई।

ढोल ग्यारस पर टूटती दिखी वर्षों पुरानी परम्परा

कभीं अधिकारी करते थे झूलो का इंतजार अब अधिकारी का इंतजार करते रहे झूले

माही की गूंज, पेटलावद।

नगर के सभी प्राचीन ओर प्रशासन के अधीन मंदिरों से देव झूलनी ग्यारस पर झूले निकालने की परम्परा है। उक्त परम्परा के अंतर्गत एक समय दस से ज्यादा झूले नगर भ्रमण के लिए के लिए निकलते थे। लेकिन समय के साथ-साथ झूलो की संख्या एक ओर दो पर सिमट गई। झूलो के साथ मंदिर पुजारी के साथ इक्का दुक्का लोग ही दिखाई देते है। वही कुछ मंदिरों के आयोजन छोटे ओर बड़े स्तर पर अपने हिसाब से होने लग गए।

वर्षों पुरानी परम्परा का होता है निर्वहन

नगर में निकलने वाले झूलो के स्वागत की एक अनोखी परम्परा यहां वर्षों से चली आ रही है। पेटलावद का इतिहास पांच सौ साल से भी पुराना है ओर देव झूलनी ग्यारस के झूलो का स्वागत राजा महाराज के दरबार तक जाते थे जहां राजा लाव लश्कर के साथ झूलो का स्वागत ओर पूजा अर्चना करते थे। समय के साथ-साथ ये परम्परा राजाओं के बाद स्थानीय अधिकारियो के जिम्मे हे गई। वर्षों से नगर में निकलने वाले झूले नगर भ्रमण कर तहसील कार्यालय पहुंचते हैं, जहां विकास खंड की मुख्य अधिकारी एसडीएम राजस्व और तहसीलदार पेटलावद द्वारा झूलो की पूजा अर्चना की जाती है इसके बाद झूले आगे बढ़ते है।

नए भवन में चले गए कार्यालय ,स्वागत का इंतजार करते रहे झूले

नगर के दोनों मुख्य कार्यकाल तहसील कार्यालय ओर अनुविभागीय अधिकारी कार्यालय का स्थान परिवर्तन होकर नगर से लगभग एक किलोमीटर दूर चले गए। इस बार झूलो का स्वागत ओर पूजा पुरानी परम्परा अनुसार पुराने तहसील भवन प्रांगण में होना था लेकिन यहां कोई अधिकारी अब नहीं होने से संशय की स्थिति बन गई थी कि झूले नए तहसील परिसर में जायेगें की अधिकारी वर्षों से जिस स्थान पर पूजा करते रहे उस स्थान पर आयेगें। देव झूलनी ग्यारस के झूले अपनी परम्परा अनुसार उसी स्थान पर पहुंचे लेकिन हर बार की तरह इस बार प्रशासन की ओर से कोई स्वागत के लिए मौजूद नहीं थे। काफी देर झूले पुरानी तहसील कार्यालय भवन के आगे खड़े रहे है ओर काफी देर बाद एसडीएम रितिका पाटीदार पहुंची ओर पूजा अर्चना कर वर्षों पुरानी परम्परा का निर्वाह किया। जिसके बाद झूले आगे बढ़े।

पुराने तहसील परिसर में देरी से पहुंच कर झूलो की पूजा कर एसडीएम राजस्व रितिका पाटीदार ने वर्षों पुरानी परम्परा को पुरा किया।

सरपंच के निर्देश के बाद भी नहीं हटा अतिक्रमण, कलेक्टर के संभावित दौरे से पहले प्रशासनिक कार्रवाई की मांग

माही की गूंज, कुंदनपुर। कृष्णपालसिंह ठाकुर

ग्राम पंचायत कुंदनपुर क्षेत्र में सार्वजनिक स्थान पर अतिक्रमण का मामला लगातार चर्चा में है। ग्राम पंचायत द्वारा अतिक्रमण हटाने को लेकर नोटिस दिए जाने और सरपंच द्वारा संबंधित दुकानदारों से अतिक्रमण हटाने के लिए कहे जाने के बावजूद कुछ दुकानदारों द्वारा अभी तक अतिक्रमण नहीं हटाया गया है।

सरपंच की ओर से जनहित में अतिक्रमण हटाने की पहल किए जाने की ग्रामीणों द्वारा सराहना की जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि, सार्वजनिक रास्ते और आम उपयोग की जगहों को अतिक्रमण से मुक्त रखना जरूरी है और पंचायत की ओर से इस दिशा में पहल किया जाना सकारात्मक कदम है।

नोटिस के बाद भी अतिक्रमण बरकरार

पंचायत की ओर से नोटिस जारी होने के बाद उम्मीद थी कि, संबंधित दुकानदार स्वयं अतिक्रमण हटा लेंगे। लेकिन इसके बावजूद स्थिति पूरी तरह सामान्य नहीं हुई है। पंचायत के निर्देशों के बाद भी यदि अतिक्रमण बरकरार रहता है तो अब प्रशासनिक स्तर पर आगे की कार्रवाई की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

ग्रामीणों का कहना है कि, यदि अतिक्रमण के कारण आम लोगों के आवागमन या सार्वजनिक व्यवस्था पर असर पड़ रहा है, तो मामले को केवल नोटिस तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। प्रशासन द्वारा मौके की स्थिति का निरीक्षण कर नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिए।

कलेक्टर के संभावित दौरे की चर्चा के बीच मामला गरमाया

इसी बीच क्षेत्र में अगले दिनों में कलेक्टर के संभावित दौरे को लेकर चर्चा है। हालांकि दौरे को लेकर अंतिम आधिकारिक पुष्टि स्थानीय स्तर पर स्पष्ट होने के बाद ही मानी जाएगी। ऐसे में अतिक्रमण का मामला प्रशासन के संज्ञान में आने पर इस पर ध्यान दिए जाने की उम्मीद है।

ग्रामीणों का कहना है कि, यदि संबंधित दुकानदार स्वयं अतिक्रमण हटा लेते हैं तो सार्वजनिक व्यवस्था बेहतर होगी। वहीं, यदि पंचायत के निर्देश और नोटिस के बावजूद अतिक्रमण नहीं हटाया जाता है तो प्रशासन को नियमानुसार मौके की स्थिति देखकर उचित कार्रवाई करनी चाहिए।

अब प्रशासनिक कार्रवाई पर टिकी नजर

कुंदनपुर के ग्रामीणों की नजर अब प्रशासन के अगले कदम पर है। लोगों की मांग है कि, सार्वजनिक रास्तों एवं स्थानों की स्थिति का मौके पर निरीक्षण किया जाए और यदि नियमानुसार अतिक्रमण पाया जाता है तो संबंधित प्रक्रिया अपनाते हुए उसे हटाने की कार्रवाई की जाए।

ग्रामीणों का कहना है कि, कार्रवाई किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि सार्वजनिक व्यवस्था और आमजन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए नियमानुसार होनी चाहिए।

सरपंच की पहल के बाद प्रशासन से उम्मीद

अतिक्रमण हटाने को लेकर सरपंच द्वारा की गई पहल को ग्रामीण सकारात्मक कदम मान रहे हैं। अब लोगों को उम्मीद है कि पंचायत के स्तर पर दिए गए निर्देशों के बाद प्रशासन भी मामले को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक कदम उठाएगा।

अब सवाल यह है कि, पंचायत के नोटिस और सरपंच के निर्देश के बाद भी अतिक्रमण कब हटेगा...? क्या संबंधित दुकानदार स्वयं अतिक्रमण हटाएंगे या प्रशासन को नियमानुसार कार्रवाई करनी पड़ेगी...? कुंदनपुर में इस मामले को लेकर ग्रामीणों की निगाह अब आगे होने वाली प्रशासनिक कार्रवाई पर टिकी हुई है।

अतिक्रमण एवं अन्य अवैध गतिविधियों की रोकथाम के लिए जारी आदेश

माही की गूंज, झाबुआ।

संभागायुक्त भास्कर लाक्षाकार ने कहा कि संभाग के सभी जिलों में अवैध कटाई, अतिक्रमण एवं अन्य गतिविधियों की रोकथाम के लिए विशेष कार्ययोजना बनाकर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। इस दिशा में सभी विभाग समन्वित प्रयास करें। उन्होंने कहा कि संभाग के जिलों में चिन्हित वनग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया में भी तेजी लाई जाए। उन्होंने यह निर्देश वर्चुअली रूप से सम्पन्न हुई संभागीय टास्क फोर्स समिति की बैठक में दिए।

बैठक में संभागायुक्त भास्कर लाक्षाकार ने निर्देश दिए कि वन अधिकार पट्टों की कार्रवाई नियमानुसार पारदर्शी रूप से करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वन अधिकार अधिनियम के प्रावधानों के तहत प्रत्येक लंबित प्रकरण का परीक्षण कर समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

संवेदनशील क्षेत्रों को चिन्हित कर ?नियमित निगरानी की जाए। गठित गश्ती दल नियमित रूप से भ्रमण करें और संदिग्ध गतिविधियों पर तत्काल कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि दुर्गम क्षेत्रों में निगरानी की व्यवस्था सुनिश्चित करें। वन क्षेत्रों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए सतत निगरानी के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर भी जागरूकता और सहभागिता को बढ़ावा दें।

एशियाई खेलों में मीराबाई चानू ने रचा इतिहास, जीता रजत पदक

नई दिल्ली, एजेंसी।

भारत की स्टार भारोत्तोलक मीराबाई चानू ने एशियाई खेलों में अपना पहला पदक जीतकर नया इतिहास रच दिया। महिलाओं की 49 किलोग्राम भार वर्ग स्पर्धा में उन्होंने कुल 198 किलोग्राम वजन उठाकर रजत पदक हासिल किया। इसके साथ ही एशियाई खेलों में भारोत्तोलन में भारत के पदक का 28 साल का इंतजार भी खत्म हो गया।

मीराबाई ने स्नैच वर्ग में शानदार शुरुआत की। उन्होंने पहले प्रयास में 83 किलोग्राम वजन उठाया। दूसरे प्रयास में 85 किलोग्राम और तीसरे प्रयास में 87 किलोग्राम वजन सफलतापूर्वक उठाया। स्नैच के बाद वह पदक की दौड़ में मजबूत स्थिति में पहुंच गई थीं।

इसके बाद क्लीन एंड जर्क में मीराबाई ने 107 किलोग्राम वजन उठाया। दूसरे प्रयास में उन्होंने 111 किलोग्राम वजन भी सफलतापूर्वक उठाया। तीसरे प्रयास की जरूरत नहीं पड़ी। इस तरह स्नैच में 87 और क्लीन एंड जर्क में 111 किलोग्राम के साथ उनका कुल भार 198 किलोग्राम रहा।

उत्तर कोरिया की रि सोंग गुम ने 215 किलोग्राम कुल भार उठाकर स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने स्नैच में 94 और क्लीन एंड जर्क में 121 किलोग्राम वजन उठाया। इंडोनेशिया की विजायाना लुलुक डियाना त्रि ने 191 किलोग्राम के साथ कांस्य पदक हासिल किया।

भारत को इससे पहले 1998 के बैंकॉक एशियाई खेलों में भारोत्तोलन का पदक कर्णम मल्लेश्वरी ने दिलाया था। उनके रजत पदक के बाद भारत को इस खेल में एशियाई खेलों का अगला पदक हासिल करने के लिए 28 साल का इंतजार करना पड़ा।

श्री सोलंकी का निधन

माही की गूंज, खवासा। माही की गूंज के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सदैव सहयोगी रहे पुरुषोत्तम सोलंकी परवाड़ा वाले हाल मुकाम खवासा का 19 सितंबर को आकस्मिक निधन हो गया है।

पुरुषोत्तम भाई सोलंकी ने बचपन से संघर्ष किया और ग्राम परवाड़ा में अपना व्यापार कर सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी अपना नाम कमाया। आपने अपने पुत्र को बाइक शोरूम का संचालक खवासा-बामनिया में बनाया। तीन वर्ष पूर्व परवाड़ा का अपना प्रतिष्ठान बेच खवासा में ही पुत्र एवं परिवार के साथ रह रहे थे। आपकी उम्र करीब 66 वर्ष होकर पूर्ण रूप से स्वस्थ थे। लेकिन पिछले कुछ दिनों से सांस की बीमारी के चलते स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे। वहीं 18 सितंबर को श्री सोलंकी का अलसुबह चक्कर आने से थोड़ा स्वास्थ्य खराब हुआ। सामान्य उपचार के साथ थांदला के केके शाह हॉस्पिटल में भर्ती कराया। रात 12 बजे सोने के पूर्व तक परिचित एवं परिवारजनों से सामान्य रूप से वार्तालाप करते रहे। वहीं 19 सितंबर को सुबह 4 बजे सांस लेने में तकलीफ होने पर डॉक्टर ने दाहोद ले जाने का कहा। पुत्र व परिवार दाहोद के रिदम अस्पताल में सुबह 7 बजे के पूर्व पहुंच गए। लेकिन यहां के डॉक्टर ने श्री सोलंकी को मृत घोषित कर दिया। जैसे ही खवासा, क्षेत्र व समाजजन में पुरुषोत्तम सोलंकी की मौत की सूचना मिली तो किसी को विश्वास नहीं हुआ। पुरुषोत्तम सोलंकी का अंतिम संस्कार स्थानीय मुक्तिधाम पर किया गया। अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल होकर उन्हे श्रद्धांजलि दी।

पुलिसकर्मी को युवक ने जड़ा थप्पड़

माही की गूंज, रतलाम।

शिवगढ़ में तेजा दशमी के जुलूस के दौरान चेकिंग में चाकू मिलने के बाद हंगामा हो गया। पुलिसकर्मी चाकू मिलने वाले युवक से पूछताछ कर रहे थे, तभी उसके साथी ने आरक्षक को चांटा मार दिया। उसे पकड़ने की कोशिश की तो युवक ने आरक्षक का गला पकड़ लिया। आरक्षक ने युवक को पकड़कर उसे काबू में किया। इस दौरान भी वह पुलिस से बदतमीजी करता रहा।

घटना का वीडियो सामने आया और तेजी से वायरल हो गया। हालांकि पुलिस ने आरोपित युवक पर प्रकरण दर्ज नहीं किया और उसे माफी मांगने के बाद छोड़ दिया। मामले में एसपी अमित कुमार ने मामले की जांच एसडीओपी से कराने व आरक्षक की ओर से एफआईआर दर्ज कराने की बात कही है।

तेजा दशमी के अवसर पर शिवगढ़ में जुलूस निकाला गया था। जुलूस में काफी भीड़ थी और शिवगढ़ थाने के पुलिसकर्मी सुरक्षा व्यवस्था में ड्यूटी कर रहे थे। इसी दौरान पुलिसकर्मियों ने कुछ लड़कों के झुंड की तलाशी ली। तलाशी में एक युवक के पास से चाकू मिला। आरक्षक कंवरलाल और नितेश जाटव युवक को पकड़कर उससे पूछताछ कर रहे थे। इसी दौरान आसपास भीड़ जमा हो गई।

चाकू मिलने वाले युवक के दोस्त ने पुलिसकर्मियों से विवाद करते हुए आरक्षक कंवरलाल को चांटा मार दिया। आरक्षक ने उसे पकड़ने की कोशिश की तो युवक ने उनका गला पकड़ लिया। आरक्षक ने उसके बाल पकड़कर उसे काबू में कर लिया। हंगामा होने पर आरक्षक नितेश जाटव ने भीड़ को तितर-बितर किया और पुलिसकर्मियों से मारपीट करने पर सख्ती दिखाई। पुलिसकर्मियों ने युवक को बाइक पर बैठाने की कोशिश की, लेकिन वह विरोध करता रहा। इसके बाद आरक्षक कंवरलाल ने उसे जबरन उठाकर बाइक के बीच में बैठाया और थाने ले गए।

पुलिसकर्मी को चांटा मारने वाले युवक की पहचान 19 वर्षीय मिथुन निवासी खेरखूंटा थाना सरवन के रूप में हुई है। पुलिस उसे पकड़कर थाने लाई तो उसने माफी मांग ली। इसके बाद उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई और उसे छोड़ दिया गया। वहीं, जिस युवक के पास से चाकू बरामद हुआ था, उसकी पहचान 20 वर्षीय बंटू पुत्र थावरा निवासी बरड़ा थाना सरवन के रूप में हुई है। उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर गिरफ्तार किया गया है। थाना प्रभारी रणजीतसिंह मकवाना ने बताया कि चाकू मिलने वाले बंटू के दोस्त मिथुन ने विवाद करते हुए आरक्षक से मारपीट की। उसे थाने लाया गया, जहां उसने माफी मांग ली। इस कारण उसके खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई। चाकू मिलने वाले बंटू के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है।

सेवा संकल्प अभियानः सारंगी में 90 यूनिट रक्त संग्रहित

माही की गूंज, झाबुआ। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, सारंगी के तत्वावधान में सारंगी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में युवाओं एवं नागरिकों ने सहभागिता करते हुए स्वैच्छिक रक्तदान किया। शिविर के माध्यम से कुल 90 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

कलेक्टर डॉ. योगेश तुकाराम भरसट, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एम.एल. चोपड़ा एवं एसडीएम श्रीमती रितिका पाटीदार के मार्गदर्शन में आयोजित शिविर में बड़ी संख्या में रक्तदाताओं ने आगे आकर रक्तदान किया और जरूरतमंद मरीजों के लिए रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सारंगी में 90 यूनिट रक्त संग्रहण के साथ संपन्न यह रक्तदान शिविर सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जनभागीदारी, सहयोग और सेवा की भावना का सार्थक उदाहरण बना।

सेवा संकल्प अभियान के तहत विभिन्न अयोजन संपन्न

माही की गूंज, आम्बुआ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 76 वें जन्मदिन को पूरे देश में सेवा संकल्प अभियान के रूप में मनाया जा रहा है। लगभग एक माह तक चलने वाले इस अभियान के तहत शिक्षण संस्थाओं में विभिन्न आयोजन संपन्न किए जा रहे हैं। तथा प्रतियोगिताओं में सफल रहने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए जा रहे हैं।

पी.एम श्री उ.मा वि आम्बुआ के प्राचार्य लोंगसिंह भयडिया ने बताया कि, देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में शासन से प्राप्त निर्देशानुसार विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम पीएम श्री उ.मा.वि आम्बुआ में किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में 19 सितंबर को भाजपा मंडल अध्यक्ष भरत माहेश्वरी के मुख्य आतिथ्य में भाषण तथा चित्र कला का आयोजन किया गया जिसकी सराहना अतिथि द्वारा की गई।

21 सितंबर को सेवा संकल्प अभियान के तहत मेरे सपनों का भारत-सेवा चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार जगराम विश्वकर्मा ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा प्रतियोगिओं द्वारा बनाई गई चित्र कला में विकसित भारत 2047 प्रधानमंत्री की परिकल्पना को विशेष रूप से उकेरा गया जिसे अतिथि द्वारा सराहा गया। तथा छात्र छात्राओं को इस प्रयास हेतु प्रोत्साहित किया गया। इन आयोजनों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्रों का वितरण श्री विश्वकर्मा के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के समस्त शिक्षक, शिक्षिकाओं ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

समझ से परे होता जा रहा है मौसम का मिजाज

माही की गूंज, आम्बुआ।

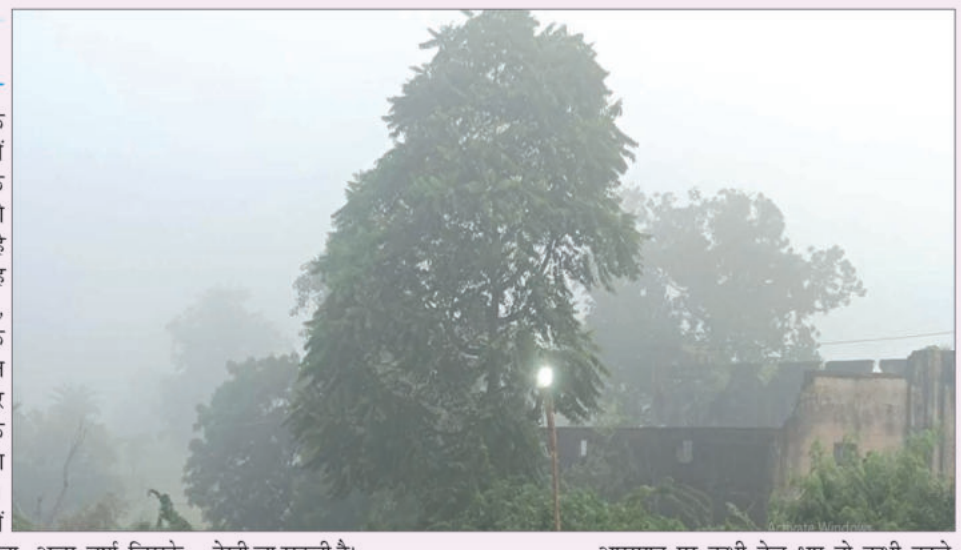

विगत लगभग एक पखवाड़े से क्षेत्र में मौसम में अनेक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। स्थिति यह है कि, आम आदमी यह नहीं समझ पा रहा है कि, आसमान पर अचानक छा जाने वाले बादल बारिश करेगें या फिर सुबह ओस की बूंदों के साथ घना कोहरा बारिश की बिदाई के संकेत हैं।

इस वर्ष क्षेत्र में बारिश की अनियमितता, अल्प वर्षा जिसके कारण क्षेत्र में नदी नालों तथा जलाशयों में अभी भी सूखा पड़ा हुआ है जोकि इस खरीफ के मौसम के लिए अच्छा नहीं है। वहीं आगामी रबी सीजन के लिहाज से भी कुछ ठीक नहीं है। रबी की फसल ही नहीं अपितु गर्मी के मौसम में जानवरों के साथ-साथ इंसानों को पेय जल कहां से आएगा, जिसकी चिंता क्षेत्र वासियों में अभी से देखी जा सकती है।

बताते हैं कि, बारिश के रुकने के बाद यदि घना कोहरा छा जाए और घास आदि पर ओस की बूंदें सुबह-सुबह दिखाई पड़ने लगे तो वर्षा की बिदाई के संकेत माने जाते हैं। कोहरे के बाद आसमान साफ हो जाता है और बादल कहीं दिखाई नहीं देते हैं। मगर इस बार इसके विपरित हो रहा है कोहरा छाया, ओस गिरी लेकिन आसमान पर कभी तेज धूप तो कभी काले बादलों का डेरा देखा जा रहा है।

मौसम के इस उतार चढ़ाव के कारण क्षेत्र में मौसमी बीमारियों में इजाफा होने से अस्पतालों में भारी भीड़ देखी जा रही है। सरकारी अस्पतालों के अलावा निजी चिकित्सकों के यहां भी मरीजों की भीड़ बनी हुई है। अनेक परिवारों में सर्दी जुकाम और बुखार के मरीज देखे जा सकते हैं।

तेजा दशमी पर रही धूम

माही की गूंज, भामल/खवासा।

खवासा में तेजा दशमी के अवसर पर मेले जेसा माहोल रहा। गांव में धार्मिक उत्साह और उमंग का माहौल रहा। इस अवसर पर श्रद्धालुओं द्वारा भगवान वीर तेजाजी की पूजा-अर्चना की गई। इसके बाद गाजे-बाजे के साथ जुलूस निकाला गया। जुलूस में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जगह-जगह श्रद्धालुओं ने जुलूस का स्वागत किया। महिलाओं, युवाओं और बच्चों में भी आयोजन को लेकर खासा उत्साह नजर आया। पूरे गांव में धार्मिक जयकारों से माहौल भक्तिमय बना रहा।

पुरे गांव में भ्रमण करके वापस जुलूस तेजाजी मंदिर पर पहुंचा जहां कई ग्रामीणों की ताती भी तोड़ी गई। तथा आयोजन के दौरान ग्रामीणों ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ तेजाजी महाराज की आराधना कर क्षेत्र में सुख-शांति और समृद्धि की कामना की। खवासा के साथ क्षेत्र के भामल, मकोड़िया व नारेला में भी जुलुस के साथ तेजाजी मंदिर पर विभिन्न धार्मिक आयोजन हुए तथा बडी संख्या में श्रद्धालु दर्शन हेतु पहुचे। यहा भी ताती तोडने का क्रम चला। तेजा दशमी का यह आयोजन गांव व क्षेत्र में आपसी भाई-चारे और धार्मिक आस्था का संदेश देते हुए हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

संपादकीय

निजी विश्वविद्यालयों को सुप्रीम कोर्ट के निर्देश

आये दिन देश के विभिन्न निजी विश्वविद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता और आर्थिक संसाधन जुटाने में पारदर्शिता के अभाव की खबरें सुर्खियां बनती रहती हैं। कुछ विश्वविद्यालयों ने अपनी सुविधा के हिसाब से कायदे-कानून बनाने और शैक्षिक जवाबदेही से बचने के रास्ते भी निकाल लिए हैं। इसी आलोक में देश भर के निजी विश्वविद्यालयों के लिए सुप्रीम कोर्ट के हालिया निर्देशों का स्वागत ही किया जाना चाहिए। दरअसल, कई तरह के आक्षेपों के बाद शीर्ष अदालत ने प्राइवेट यूनिवर्सिटीज के संचालकों से पूछा है कि वे बताएं कि उनके विश्वविद्यालयों में वित्तीय संसाधन कैसे जुटाये जाते हैं? संसाधनों का प्रबंधन किस तरह से किया जाता है? इसके अलावा ये विश्वविद्यालय इस धन का प्रयोग किस तरह से करते हैं? सही मायने में अदालत का यह निर्देश विश्वविद्यालयों के आय और व्यय के सामान्य ऑडिट से कहीं आगे की बात करता है। दूसरे शब्दों में अदालत के निर्देशों में यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रवेश के समय छात्रों को सुविधाओं के जो सब्जबाग दिखाए जाते हैं उसके मुकाबले हकीकत में कितनी सुविधाएं मिलती हैं। कह सकते हैं कि यह एक आवश्यक रियलिटी चेक है। वास्तव में कोर्ट की जिज्ञासा के पीछे ठोस कारण भी हैं। दरअसल, समाज में यह धारणा बलवती होती जा रही है कि शिक्षा का क्षेत्र धीरे-धीरे एक बिजनेस मॉडल का रूप लेने लगा है। आक्षेप तो यहां तक हैं कि शिक्षा का ये कारोबार रियल एस्टेट मॉडल में बदल गया है। जहां सिर्फ इस बात से ही फर्क पड़ता है कि कितने छात्र दाखिला ले रहे हैं और विभिन्न प्रकार के शुल्क लगाने से इन संस्थानों को कितना मुनाफा हो रहा है। निस्संदेह, सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी तार्किक ही है कि प्राइवेट यूनिवर्सिटीज को शिक्षा के व्यापक सार्वजनिक उद्देश्य को पूरा करना चाहिए। वे सिर्फ मुनाफे के लिये ही काम नहीं कर सकते। कोर्ट का कहने का अभिप्राय है कि छात्रों के किसी भी तरह के शोषण को रोकने के लिये मजबूत नियामक संस्था की निगरानी जरूरी है।

निस्संदेह, इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जा सकती है कि दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देश में उच्च शिक्षा की मांग तेजी से बढ़ी है। वहीं सरकारी विश्वविद्यालय इस मांग को पूरा करने में असमर्थ हैं। वजह साफ है कि वित्तीय संसाधनों की कमी के चलते सरकारी संस्थान ज्यादा संख्या में छात्रों को मौका देने में विफल नजर आते हैं। जिसके चलते देश में निजी विश्वविद्यालयों को पांव पसारने का मौका मिल रहा है। वहीं एक हकीकत यह भी है कि कड़ी स्पर्धा वाले निजी क्षेत्र ने बीते कुछ वर्षों में आधी-अधूरी सच्चाइयों का सहारा लेकर अपना कारोबार बढ़ाया है। पर्याप्त शैक्षिक ढांचा न होने, योग्य-अनुभवी शिक्षकों की कमी और प्रभावी अकादमिक शोध की अनदेखी के बावजूद विश्वविद्यालय परिसरों में उपलब्ध सुविधाओं को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है। वहीं दूसरी ओर प्लेसमेंट के बाबत भी आंकड़ों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है। दरअसल, यदि फैकल्टी डेवलपमेंट की कमी एक समस्या है, तो उससे अधिक चिंता करने वाली बात यह भी है कि कम स्टाफ पर ज्यादा काम करने का अतिरिक्त बोझ भी है। अंततः इस सब का खामियाजा छात्रों को ही भुगतना पड़ता है, क्योंकि उनके हितों से ही समझौता किया जाता है। वहीं सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बावजूद निजी विश्वविद्यालयों के लिये फीस स्ट्रक्चर, कर्मचारियों के वेतन, अन्य खर्चों व सरकार से मिलने वाले फायदों या भर्ती और शिक्षा के मानकों के बारे बढ़ा-चढ़ाकर जानकारी देना मुश्किल नहीं होगा। कागजी कार्यवाही पूरी करने की उनकी महारत पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता है। सही मायने में असली चुनौती सख्त जांच-पड़ताल की होगी। खासकर उस वातावरण में जहां लंबे समय से नियमों और सही तौर-तरीकों की अनदेखी की जाती रही है। हकीकत में निजी विश्वविद्यालयों के लिये जिम्मेदारी और जवाबदेही अनिवार्य शर्त होनी चाहिए। विश्वास किया जाना चाहिए कि देश में उच्च शिक्षा का नियमन करने वाली संस्थाएं अब अपने दायित्वों का निर्वहन ईमानदारी से करेंगी। तभी सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के सार्थक परिणाम सामने आ सकते हैं।

पंजाबियों की विवेकशीलता की परीक्षा होंगे आसन्न चुनाव

अगले वर्ष के आरंभ में होने वाले पंजाब विधानसभा चुनाव राज्य के उथल-पुथल भरे राजनीतिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ साबित हो सकते हैं। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए, आगामी चुनाव राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के तौर-तरीकों और समीकरणों को नए सिरे से परिभाषित कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद पहली बार पांच प्रमुख राजनीतिक दल सत्ता के लिए चुनावी मैदान में आमने-सामने होंगे। सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी यानी आप को चुनौती देने वाले चार विपक्षी दलों में 'वारिस पंजाब दे' भी शामिल है। यह एक नवोदित राजनीतिक संगठन है, जिसने अपने सुधारवादी तेवर और राजनीतिक बदलाव के वादे के कारण ग्रामीण सिख युवाओं के बीच उल्लेखनीय समर्थन हासिल किया है। यह स्थिति पारंपरिक राजनीतिक दलों के प्रति घटती जन-रुचि का भी संकेत देती है।

पंजाब की अस्मिता से जुड़े मुद्दों से काफी हद तक लोकप्रियता हासिल करने वाला यह नया राजनीतिक दल–अन्य दलों, विशेषकर अकाली दल, के मत प्रतिशत में सेंध लगा सकता है। हालांकि, संभवतः वह सत्तारूढ़ दल के लिए गंभीर चुनौती पेश करने की स्थिति में न हो। फिर भी, चुनावी मैदान में इसकी स्पष्ट उपस्थिति ने पंजाब के राजनीतिक संतुलन को प्रभावित किया है और उग्र राजनीति की वापसी को लेकर आशंकाओं को फिर से जन्म दिया है। राजनीतिक प्रासंगिकता पुनः हासिल करने का प्रयास कर रहे अकाली दल का सिमटता प्रभाव, तेजी से उभरती भाजपा और कांग्रेस द्वारा स्वयं को पहुंचाया गया राजनीतिक नुकसान–इन सभी ने मिलकर पंजाब की राजनीति का चेहरा बदला है। इसके साथ ही, अकाली दल और भाजपा के बीच संभावित गठबंधन चुनाव से पहले और चुनाव के बाद के राजनीतिक समीकरणों को पूरी तरह बदल सकता है। यह गठबंधन आप के सामने प्रमुख चुनौती के रूप में उभर सकता है। इन परिस्थितियों में, खंडित जनादेश और उससे पैदा होने वाली राजनीतिक अस्थिरता की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

विभिन्न विकास सूचकांकों पर पंजाब की आ रही गिरावट को तब तक पलटा नहीं जा सकता, जब तक राज्य के पुनर्निर्माण और नवोदय के लिए महत्वपूर्ण नीतियों पर व्यापक राजनीतिक सहमति न बने।

जमीनी परिस्थितियां और एक सुदृढ़ लोकतंत्र की आवश्यकताएं राजनीतिक संवाद में शालीनता तथा संबंधों में मर्यादा-सौहार्द की मांग करती हैं। राजनीतिक नेताओं के बीच संवाद के सौहार्दपूर्ण माध्यम बने रहना आवश्यक है, क्योंकि राज्य के विकास के लिए विवेकपूर्ण नीतियों पर व्यापक सहमति बनाने हेतु नेताओं के बीच सहयोग और सामंजस्य अनिवार्य है। सोशल मीडिया पर राजनीतिक नेताओं के बीच सार्वजनिक रूप से होने वाली कटु और अस्वस्थ बहसें, जो अब एक अंतहीन तमाशे का रूप ले चुकी हैं, उनकी व्यक्तिगत विश्वसनीयता को कमजोर कर रही हैं। किसी की प्रतिष्ठा-गरिमा को कलंकित करना लोकतांत्रिक संवाद के मूल सिद्धांतों का उल्लंघन है। हिंसक या भय उत्पन्न करने वाले स्वर में दिया गया वक्तव्य लोकतंत्र की उस सौम्यता और प्रभावकारी शक्ति को कमजोर करता है, जो राजनीतिक और सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करने में उसकी केंद्रीय विशेषताएं हैं। इसलिए अब समय आ गया है कि सार्वजनिक संवाद का स्तर ऊंचा उठाया जाए।

एक जीवंत और समृद्ध राज्य के रूप में पंजाब के पुनरुत्थान के लिए उदार और विशाल हृदय वाले नेतृत्व की आवश्यकता है। आज पंजाब को ऐसा नेता चाहिए, जो स्वयं से ऊपर उठ सके, वंचित और हाशिये पर खड़े लोगों के प्रति करुणा और संवेदनशीलता को शासन का मूल भाव बना सके, सत्ता-प्राप्ति के आकर्षण का प्रतिरोध कर सके। हमें ऐसे नेता चाहिए, जो दमनकारी अधिकार को अपनी शक्ति न समझें और ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखें, जिनका नेतृत्व का दावा शक्ति-प्रदर्शन और समर्थकों के रूप में प्रस्तुत होने वाले सत्ता के दलालों की चाटुकारिता पर टिका हो। जनता के अन्याय और पीड़ा के प्रति उदासीन अहंकारी सत्ता का प्रतिरोध करना एक निर्विवाद नैतिक दायित्व है।

लोकतंत्र अंततः उन्हीं नेताओं के कारण टिकता है, जो शोषित और कमजोर लोगों की आंखों में छलकने से रह गए आंसुओं को देख सकें और उनकी दबी हुई आहों को सुन सकें। पंजाब की वीर और जीवट जनता, जो गुरुओं की शिक्षाओं से प्रेरणा लेती है, अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों से ऐसे शासन की अधिकारी है, जिसकी नींव कानून व न्याय पर टिकी हो।

एक जीवंत लोकतंत्र की वास्तविक कसौटी उसकी प्रक्रियाओं की शुचिता है–ऐसी प्रक्रियाएं, जो विचारों की स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा के माध्यम से प्रेरणादायी नेतृत्व को जन्म दे सकें। ऐसा नेतृत्व 'चतुर व्यक्ति के अहंकार' पर नहीं, बल्कि मानवीय स्थिति की समग्र समझ पर आधारित होना चाहिए। हम जानते हैं कि लोकतंत्र हमारे समय के नैतिक प्रश्नों पर सार्वजनिक तर्क-विमर्श का नाम है। पंजाब जब अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा है, तब उसे ऐसे नेताओं के नेतृत्व वाली सरकार की आवश्यकता है, जिनमें 'दुस्साहसी आदर्शवाद' हो; ऐसे नेता जो ऐसी दिशा तय कर सकें, जिससे लोगों में आशा का संचार हो। साथ ही, रोजगार सृजन, नशे की समस्या से निपटने के लिए सार्थक नीतियों, राज्य की शक्ति के घोर दुरुपयोग और उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश, राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन से जुड़े जटिल प्रश्नों पर विचारपूर्ण दृष्टिकोण, पर्यावरण संरक्षण तथा साझी विरासत पर आधारित सामाजिक सौहार्द के संरक्षण के माध्यम से उस आशा को ठोस रूप दिया जा सके।

इन चुनौतियों के बावजूद, क्या हम यह आशा कर सकते हैं कि राज्य के विधानसभा चुनावों में राजनीतिक दल जातिवादी और सांप्रदायिक राजनीति से ऊपर उठेंगे? क्या वे ऐसे नेताओं को सामने ला सकते हैं, जिनके पास वह नैतिक विश्वसनीयता हो, जो एक गौरवशाली और वीर जनता से ईमानदारी से संवाद कर सकें और उसे सम्मानपूर्ण जीवन का अवसर देने का संकल्प प्रस्तुत कर सकें? या फिर पंजाब को ऐसे लोगों का बोझ उठाते रहना होगा, जिनके लिए राजनीति सही और गलत की किसी भावना से मुक्त होकर केवल सत्ता हासिल करने का साधन है? ये ऐसे प्रश्न हैं, जिनका सामना राज्य के राजनीतिक दलों और नेताओं को करना ही होगा।

अश्विनी कुमार

लोकतंत्र की सार्थकता तब सिद्ध होती है, जब एक जागरूक मतदाता उन लोगों को नेतृत्व सौंपने में सक्षम हो, जो निःस्वार्थ भाव से प्रेरित हों और ऐसी राजनीति के प्रति प्रतिबद्ध हों, जिसमें मानवीय गरिमा और जनता के सम्मान को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हो। उम्मीद की जानी चाहिए कि पंजाब ऐसी ऊर्जावान राजनीति का मार्गदर्शक बन सके–ऐसी राजनीति, जो जनता की इच्छाशक्ति को जाग्रत करे, हमारे संस्थापकों के आदर्शवाद से प्रेरणा ले और उस इच्छाशक्ति को एक नए सार्वजनिक उद्देश्य में परिणत करे। इसके लिए राजनीतिक स्पेक्ट्रम के विभिन्न हिस्सों से श्रेष्ठ नेतृत्व और प्रतिभाओं को साथ लाने तथा राज्य में परिवर्तनकारी नेतृत्व के विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियां तैयार करने की जरूरत होगी। अगले चुनाव में एक बार फिर पंजाब की जनता की सामूहिक विवेकशीलता की परीक्षा होगी।

संवाद के जरिए कड़वाहट कम करने की कवायद

आज जब चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ज्वाइंट बेस एंड्रयूज पहुंचेंगे, तब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप स्वयं हवाई पट्टी पर उनका स्वागत कर सकते हैं। यह इसलिए भी अहम है कि मई में बीजिंग पहुंचने पर ट्रंप की अगवानी शी ने स्वयं नहीं की थी। ऐसे में एंड्रयूज पर ट्रंप की ओर से व्यक्तिगत स्वागत महज औपचारिकता नहीं, बल्कि एक कूटनीतिक संकेत होगा।

अमेरिका और चीन रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी हैं, लेकिन दोनों नेता यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि यह प्रतिस्पर्धा अनियंत्रित टकराव में न बदले। 24 सितंबर की बैठक में व्यापार, तकनीक और वैश्विक संघर्षों से जुड़े कठिन मुद्दों पर बातचीत होगी। लगभग चार वर्ष बाद दोनों नेता ऐसे समय में मिल रहे हैं, जब व्यापार शुल्क, दुर्लभ खनिज, एआई, ताइवान, तथा यूक्रेन और ईरान जैसे संघर्ष एक-दूसरे से जुड़ चुके हैं। यह मुलाकात रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को संवाद के जरिए नियंत्रित करने की परीक्षा भी है। भारत के लिए यह शिखर बैठक विशेष महत्व रखती है। नई दिल्ली वाशिंगटन, मॉस्को और बीजिंग के साथ संतुलन बनाए हुए है। ट्रंप व शी के बीच किसी भी समझ से भारत की रणनीतिक स्थिति सीधे नहीं बदलेगी, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय माहौल प्रभावित हो सकता है।

ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में व्यक्तिगत कूटनीति का महत्व बढ़ा है। उन्होंने लंबे संघर्षों में अमेरिकी भागीदारी कम करने की बात कही थी, लेकिन ईरान और यूक्रेन के मोर्चे अभी समाप्त नहीं हुए। इस परिस्थिति ने उन्हें सक्रिय बातचीत और समझौतों की ओर बढ़ाया है। ट्रंप का तरीका लेन-देन पर आधारित है। टैरिफ बातचीत का हथियार हैं, प्रतिबंध दबाव का साधन और आर्थिक संबंध रणनीतिक सौदेबाजी का हिस्सा। चीन इस नीति की सबसे बड़ी परीक्षा है, क्योंकि वह व्यापारिक शक्ति होने के साथ तकनीकी व सैन्य प्रतिद्वंद्वी तथा रूस और ईरान का महत्वपूर्ण साझेदार भी है।

चीन के साथ हर मोर्चे पर अनिश्चितकालीन टकराव अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए भी महंगा पड़ सकता है। नवंबर की व्यापार समय-सीमा करीब है और दुर्लभ खनिजों तथा तकनीकी प्रतिबंधों पर तनाव है। संबंधों के कुछ हिस्सों को स्थिर करने से ट्रंप को अन्य संकटों पर ध्यान केंद्रित करने की गुंजाइश मिल सकती है। वैसे बैठक का तत्काल मुद्दा व्यापार रहेगा। अमेरिका चीनी बाजार में अपने सामान के लिए अधिक पहुंच चाहता है, जबकि बीजिंग को अमेरिकी शुल्क व तकनीकी प्रतिबंधों में अधिक निश्चितता चाहिए। इसलिए दोनों पक्ष मौजूदा व्यापार संघर्ष-विराम को नवंबर के बाद भी बढ़ाने पर विचार कर सकते हैं।

इस समय दुर्लभ खनिज अधिक रणनीतिक विषय हैं। इनके प्रसंस्करण में चीन की प्रमुख स्थिति इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, रक्षा और एआई जैसे क्षेत्रों को प्रभावित करती है। अमेरिका विश्वसनीय आपूर्ति चाहता है, जबकि चीन को उन्नत तकनीक पर अमेरिकी प्रतिबंधों में ढील चाहिए।

अमेरिका ने चीनी कंपनियों पर अत्याधुनिक एआई तकनीक से संबंधित जानकारी हासिल करने के आरोप लगाए हैं, वहीं बीजिंग ने ये आरोप खारिज किये। अब एआई मॉडल, उन्नत सेमीकंडक्टर, कंप्यूटिंग क्षमता और आंकड़ों को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ा जा रहा है। शिखर बैठक में शुल्क में बदलाव जल्दी हो सकता है, लेकिन तकनीकी बढ़त आने वाले दशकों तक आर्थिक और सैन्य शक्ति को प्रभावित कर सकती है। वहीं, ताइवान वह मुद्दा है, जिसमें व्यापक समझ की संभावना सबसे कठिन हो सकती है। बीजिंग चाहता है कि वाशिंगटन ताइवान की आजादी का स्पष्ट विरोध करे, जबकि अमेरिका के सहयोगी यह देखेंगे कि क्या सुरक्षा प्रतिबद्धताएं आर्थिक सौदेबाजी का हिस्सा बन रही हैं। इस समय चीन के लिए ताइवान संप्रभुता का मूल प्रश्न है, तो अमेरिका के लिए यह हिंद-प्रशांत रणनीति और क्षेत्रीय सहयोगियों से जुड़ा है। इसलिए ट्रंप और शी यदि टकराव से बच जाएं, तो उनके बयानों का पूरे एशिया में बारीक विश्लेषण होगा।

जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया और ताइवान खासतौर पर वाशिंगटन की सुरक्षा प्रतिबद्धताओं पर नजर रखेंगे। अमेरिका-चीन संवाद क्षेत्रीय तनाव को कम कर सकता है। यदि किसी समझौते को अमेरिकी प्रतिरोध क्षमता को कमजोर करने वाला माना गया, तो सहयोगी देशों में नई चिंताएं पैदा हो सकती हैं। यूरोप भी इस बैठक पर कड़ी नजर रखेगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अमेरिका चीन के साथ ऐसा कोई बड़ा समझौता न करे, जिसका यूरोप की सुरक्षा और अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

के.एस.तोमर

ईरान और यूक्रेन भी बातचीत से पूरी तरह बाहर नहीं रहेंगे। चीन के ईरान के साथ महत्वपूर्ण आर्थिक संबंध हैं, और रूस के साथ मजबूत रिश्ते हैं। वाशिंगटन चाहता है कि बीजिंग इन संबंधों का इस्तेमाल तेहरान और मॉस्को पर प्रभाव डालने के लिए करे, लेकिन चीन के अपने आर्थिक और रणनीतिक हित भी हैं।

ट्रंप और शी की बैठक का सबसे बड़ा महत्व शायद किसी एक समझौते में नहीं, बल्कि इस बात में होगा कि दोनों देश अपनी प्रतिद्वंद्विता को किस सीमा तक नियंत्रित कर पाते हैं। फिर भी संवाद का महत्व कम नहीं है। अमेरिका और चीन दोनों जानते हैं कि हर मोर्चे पर खुला टकराव उनके हित में नहीं है।

इस बैठक का आकलन इस आधार पर होगा कि वे किन मुद्दों को अनसुलझा छोड़ते हैं। आज की विभाजित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में प्रतिद्वंद्विता को खुले टकराव में बदलने से रोक पाना भी एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक लक्ष्य है।

खाद्य आपुर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाएं सरकारे

ज्ञानेंद्र रावत

प्रशांत महासागर में जिस तरह गर्मी ने अलनीनो को ताकतवर बना दिया है, उसका असर अगले साल फरवरी से पहले खत्म होने की उम्मीद नहीं है। अगले कुछ महीनों तक तापमान और बारिश का मिजाज सामान्य रहने की उम्मीद भी बेमानी है। कहीं तेज बारिश, कहीं तेज गर्मी और कहीं बाढ़ जैसी मौसमी घटनाएं इसका संकेत दे ही चुकी हैं। इसका असर सर्दियों पर भी पड़ने की आशंका है।

डब्ल्यूएमओ के अनुसार, प्रशांत महासागर में अगस्त महीने में तापमान सामान्य से 2.2 से 2.6 डिग्री अधिक हो गया। यही नहीं, समुद्र की गहराई में भी कई हिस्सों में पानी सामान्य से आठ डिग्री अधिक गर्म पाया गया है। इसी गर्मी ने अलनीनो को और ताकत दी है। डब्ल्यूएमओ की मानें तो सितंबर से नवंबर तक दुनिया के सभी हिस्सों में सामान्य से अधिक तापमान रहने की आशंका है। पहले से ही धरती पर पड़ रही गर्मी के बीच अलनीनो के असर से तापमान और बढ़ सकता है। इस कारण बारिश और तापमान वृद्धि के साथ-साथ सूखे और बाढ़ का खतरा भी बढ़ जाएगा।

दरसअल, प्रशांत महासागर का पानी गर्म होने पर भारत की ओर आने वाली हवाओं के दबाव और उनकी दिशा में बदलाव आता है। इससे बादलों की आवाजाही और बारिश के रास्ते में भी परिवर्तन होता है। यही कारण है कि इसका असर हजारों किलोमीटर दूर स्थित भारत जैसे देशों के मौसम पर भी पड़ता है। भारत में कम बारिश होने पर भी अलनीनो का प्रभाव बना रह सकता है। बीता अगस्त इसका उदाहरण है, जब सामान्य से 16 प्रतिशत कम बारिश हुई और सितंबर का पहला पखवाड़ा भी अगस्त की तरह ही रहा।

यदि हिंद महासागर में विकसित होने वाला इंडियन ओशन डाइपोल आने वाले दिनों में पॉजिटिव हुआ तो अलनीनो की चपेट में आए मानसून को और नई ताकत मिल सकती है। यह भी माना जाता है कि अलनीनो से हवाओं की ताकत घटती है और अनेक इलाकों में बारिश सामान्य से कम रह जाती है। हालांकि, यह भी कटु सत्य है कि भारत का मानसून केवल अलनीनो से निर्धारित नहीं होता। बंगाल की खाड़ी में बनने वाले कम दबाव के क्षेत्र, मानसूनी टर्फ की स्थिति और हिंद महासागर की परिस्थितियां भी बारिश की मात्रा और उसके वितरण को काफी हद तक प्रभावित करती हैं।

कई बार कुल बारिश बहुत कम नहीं होती, लेकिन उसका समय और क्षेत्रीय वितरण असंतुलित हो जाता है। इससे देश के कई राज्यों में बुआई, अंकुरण और फसलों की शुरुआती बढ़ोतरी प्रभावित होती है। कई बार मजबूत अलनीनो के दौरान भी देश के कुछ इलाकों में अधिक बारिश होती है। यह काफी हद तक आईओडी की स्थिति पर निर्भर करता है कि वह पॉजिटिव रहता है या नहीं। अगर वह पॉजिटिव नहीं हुआ तो अलनीनो का दबाव बढ़ सकता है। ऐसी स्थिति में मध्य भारत, उत्तर-पश्चिम भारत और प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में बारिश सामान्य से भी कम रहने का खतरा बना रहेगा।

इस बार केंद्र सरकार का जोर जिलावार मौसम की निगरानी पर है। अलनीनो का खतरा केवल मौसम का मुद्दा नहीं है, बल्कि वह उत्पादन, खाद्य कीमतों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से भी जुड़ा है।

अलनीनो का असर केवल मानसून तक सीमित नहीं रहेगा। इसके मजबूत रहने पर सर्दियों में भी तापमान सामान्य से अधिक रहने की आशंका है। समूचे उत्तर भारत में सर्दियों के छोटे होने और फरवरी-मार्च में गर्मी बढ़ने का रुझान पहले से दिखाई दे रहा है। इस हकीकत से भी मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि 2022-24 के मजबूत अलनीनो ने पहले से गर्म हो रहे ग्रह के तापमान में वृद्धि में नकारात्मक भूमिका निभाई और 2024 को दुनिया के सबसे गर्म वर्ष के रूप में दर्ज कराया।

दरसअल, अलनीनो जैसी चक्रीय जलवायु घटनाएं हर तीन से सात साल में होती हैं। इनकी पुनरावृत्ति पूरी दुनिया के लिए मुश्किलें खड़ी कर रही है। इनका सर्वाधिक असर भूमध्यरेखीय और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों पर पड़ता है। भारत में कर्नाटक और पंजाब जैसे राज्यों में भी इनका प्रभाव देखा जाता है। ये घटनाएं मानसून के मिजाज को काफी हद तक प्रभावित कर सकती हैं। ऐसी स्थिति में समय रहते चेतावनी देने वाले डेटा को आपस में साझा करना और सीमाओं के पार पारदर्शी वैज्ञानिक सहयोग बढ़ाना बेहद जरूरी है। सूखे से लड़ने वाली फसलों के बीजों को साझा करना और पानी के भंडारों को सुरक्षित रखना भी आवश्यक है।

अलनीनो को लेकर अब हमारी सरकार अलर्ट मोड पर है। लेकिन ये चक्रीय जलवायु घटनाएं दुनिया को चेतावनी है कि वे अपने राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर खाद्य सुरक्षा को प्राथमिकता दें और आपदा प्रबंधन में पर्याप्त निवेश करें। इस बाबत संयुक्त राष्ट्र का सेंडाई फ्रेमवर्क भी आपदा जोखिम को कम करने और वैश्विक विकास लक्ष्यों में जलवायु लचीलेपन को शामिल करने पर विशेष जोर देता है।

2 हजार से ज्यादा पेट्रोल पंप पर बंद हो सकती है यूपीआई से पेमेंट

माही की गूंज, शाजापुर।

पेट्रोल-डीजल भरवाने के बाद मोबाइल निकालकर यूपीआई से भुगतान करने वाले वाहन चालको के लिए आने वाले दिनों में बड़ी खबर सामने आ सकती है। 2 हजार से अधिक के यूपीआई ट्रांजेक्शन पर चार्ज लगाए जाने के निर्णय को लेकर पंप संचालक अब अगली रणनीति पर 2 विचार कर रहे हैं। फिलहाल जिले के पंपों पर यूपीआई भुगतान को लेकर किसी तरह की रोक नहीं है और ग्राहकों को डिजिटल भुगतान की सुविधा मिल रही है, लेकिन यदि 15 अक्टूबर तक यूपीआई ट्रांजेक्शन पर लगने वाले चार्ज को हटाने को लेकर कोई समाधान नहीं निकलता है, तो पेट्रोल पंप एसोसिएशन 2 हजार रुपए से अधिक के यूपीआई भुगतान को स्वीकार नहीं करने का फैसला ले सकता है।

पेट्रोल पंप संचालकों के इस संभावित फैसले का सीधा असर उन वाहन चालको पर पड़ सकता है, जो एक बार में 2 हजार से अधिक का पेट्रोल या डीजल भरवाते है। खासकर कार, ट्रैक्टर, पिकअप, ट्रक, बस और अन्य व्यावसायिक वाहनों में ईंधन भरवाने के दौरान भुगतान की राशि कई बार 2 हजार से अधिक होती है।

चार्ज का बोझ पड़ा तो रोजाना हजारों का नुकसान

शाजापुर जिला पेट्रोल पंप एसोसिएशन अध्यक्ष श्याम गिरी के अनुसार डिजिटल भुगतान का इस्तेमाल लगातार बढ़ा है। ग्राहक नकद रखने के बजाय मोबाइल से भुगतान करना ज्यादा सुविधाजनक मानते हैं। पंपों पर भी यूपीआई भुगतान ने लेन-देन को आसान बनाया है। ऐसे में बड़े भुगतान पर चार्ज लगने से संचालकों की लागत बढ़ेगी। एसोसिएशन के अनुसार जिले में सभी पेट्रोल पंपों को मिलाकर यदि 2 हजार से अधिक के यूपीआई भुगतान पर लगने वाला चार्ज जारी रहता है, तो संचालकों को प्रतिदिन करीब 1 लाख तक का नुकसान उठाना पड़ सकता है।

अभी सब सामान्य

अध्यक्ष ने बताया फिलहाल पंपों पर स्थिति सामान्य है। ग्राहक 2 हजार रुपए से अधिक का भुगतान भी यूपीआई के माध्यम से कर पा रहे है। संचालकों ने भी अभी तक ग्राहकों के लिए किसी तरह की सीमा लागू नहीं की है। हालांकि एसोसिएशन स्तर पर इस मुद्दे पर विचार-विमर्श किया जा रहा है। पंप संचालकों का कहना है कि यदि 15 अक्टूबर तक चार्ज के मामले में कोई समाधान निकलता है तो मौजूदा व्यवस्था जारी रह सकती है।

सबसे ज्यादा असर बड़े वाहनों के ग्राहकों पर

एसोसिएशन के अनुसार यदि व्यवस्था लागू होती है तो सबसे ज्यादा असर उन ग्राहकों पर पड़ सकता है, जिनका एक बार का ईंधन बिल 2 हजार रुपए से अधिक होता है। ट्रैक्टर और व्यावसायिक वाहनों में बड़ी मात्रा में डीजल भरवाने पर भुगतान राशि आसानी से इस सीमा को पार कर जाती है। ऐसे ग्राहको को यूपीआई की जगह नकद या अन्य भुगतान विकल्प का इस्तेमाल करना पड़ सकता है।

डिजिटल भुगतान बढ़ने के बीच नया विवाद

पंपों पर पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल भुगतान का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। ग्राहक छोटे से लेकर बड़े भुगतान तक मोबाइल से करना पसंद कर रहे हैं। ऐसे समय में यूपीआई के बड़े ट्रांजेक्शन पर चार्ज का मुद्दा पेट्रोल पंप संचालकों के लिए महत्वपूर्ण बन गया है। संचालकों का तर्क है कि ग्राहक को डिजिटल भुगतान की सुविधा उपलब्ध कराने के साथ उसका आर्थिक भार भी पंप संचालकों पर नहीं डाला जाना चाहिए।

8-लेन पर दिन में ही पहाड़ी से पत्थर फेंकते रहे दो युवक, वीडियो वायरल

माही की गूंज, रतलाम।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे (एटलेन) पर वाहनों पर लगातार हो रही पत्थरबाजी के मामले में रतलाम के दीनदयाल नगर थाने में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ जीरो पर एफआईआर दर्ज की गई है। मामला घटनास्थल के आधार पर थांदला थाना जिला झाबुआ को भेजा गया है।

इसी बीच मंगलवार को एक नया वीडियो सामने आया है, जिसमें दो युवक एक्सप्रेस वे के पास पहाड़ी पर खड़े होकर नीचे से गुजर रहे वाहनों पर पत्थर फेंकते नजर आ रहे हैं। वीडियो थांदला और शिवगढ़ की सीमा क्षेत्र का बताया जा रहा है और इंटरनेट मीडिया पर बहुप्रसारित हो रहा है।

दोनों को वीडियो में कैद किया गया है

वीडियो में करीब एक हजार फीट की ऊंचाई से युवक अपनी जान खतरे में डालकर पत्थरबाजी करते नजर आ रहे है। किसी वाहन चालक द्वारा दोनों को वीडियो में कैद किया गया है। मालूम हो कि 19 सितंबर को कुक्षी निवासी जानू अपने मित्र अशरफ, हामिद, इमरान और अजहर के साथ किया कार्निवल (क्रमांक एमपी-09-एपी-9322) से दिल्ली जा रहे थे।

थांदला टोल से निकलने के करीब 10 मिनट बाद एटलेन पर उनकी कार पर सामने से पत्थर मारा गया। इससे कार की विंडशील्ड टूट गई और इमरान मंसूरी के दाहिने हाथ के कंधे में पत्थर लगने से चोट आई। चालक ने कार नहीं रोकी और सीधे रतलाम पहुंचे और पथराव की जानकारी दी।

वीडियो की भी जांच की जा रही है

थाना प्रभारी अनुराग यादव ने बताया कि प्रकरण दर्ज कर थांदला पुलिस को भेजा है। पथराव के बहुप्रसारित वीडियो की भी जांच की जा रही है। लगातार घटनाओं के बाद रविवार को रतलाम और झाबुआ पुलिस के अधिकारियों ने बार्डर मीटिंग की थी। इसमें संयुक्त पेट्रोलिंग, हाटस्पाट पर सशस्त्र बल की तैनाती और ड्रोन से निगरानी का निर्णय लिया गया।

मंदिर के बाहर प्रसाद ले रही महिलाओं को कार ने रौंदा

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले के पिपलियामंडी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सुपड़ा गांव में एक बेहद दर्दनाक और भयानक सड़क हादसा सामने आया है। गांव के प्रसिद्ध इच्छापूर्ण बालाजी मंदिर के बाहर भगवान गणेश की आरती के बाद प्रसादी लेकर निकल रहीं श्रद्धालुओं को एक तेज रफ्तार बेकाबू कार ने बेरहमी से कुचल दिया। इस हादसे में 6 महिलाएं और एक 13 वर्षीय बच्ची गंभीर घायल हो गईं। टक्कर इतनी जोरदार थी कि मौके पर मौजूद चश्मदीदों ने बताया ऐसा लगा जैसे कोई तेज भूकंप आ गया हो।

प्रसादी लेकर बाहर निकल रही थीं महिलाएं

घटना रात करीब 11:30 बजे की है। सुपड़ा गांव के बालाजी मंदिर में गणेश स्थापना के उपलक्ष्य में महाआरती का आयोजन किया गया था। आरती समाप्त होने के बाद कुछ युवक मंदिर परिसर में डांस कर रहे थे और महिलाएं गेट के पास प्रसादी लेकर बाहर निकल रही थीं। इसी दौरान तेज रफ्तार कार (आरजे 45 सीएस 0432) आई और महिलाओं को रौंदते हुए सीधे मंदिर में जा घुसी। टक्कर लगते ही मौके पर कोहराम मच गया और चारों तरफ चीख-पुकार गूंज उठी।

ग्रामीणों का फूटा गुस्सा

हादसे को देख मौके पर मौजूद ग्रामीणों का गुस्सा भड़क गया। लोगों ने तुरंत दौड़कर कार को घेरा और भागने का प्रयास कर रहे चालक 32 वर्षीय अर्जुनसिंह पुत्र कमलसिंह निवासी सुजानपुरा थाना पिपलिया मंडी को पकड़ लिया। ग्रामीणों ने चालक को कार से बाहर खींचकर उसकी जमकर धुनाई की।

इसके बाद भीड़ ने बिजली के खंभे से बांध दिया। ग्रामीणों ने कार में भी जमकर तोड़फोड़ की। घटना की सूचना मिलते ही पिपलियामंडी थाना प्रभारी विक्रमसिंह इनवे पुलिस बल के साथ तुरंत मौके पर पहुंचे। पुलिस ने बड़ी मशक्कत के बाद ग्रामीणों के चंगुल से ड्राइवर को छुड़ाया और उसे हिरासत में लेकर थाने भिजवाया।

एक महिला के दोनों पैर टूटे, रतलाम रेफर

दुर्घटना के तुरंत बाद सभी घायलों को डायल 112 से पिपलियामंडी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद देर रात लगभग 1 बजे उन्हें मंदसौर जिला अस्पताल रेफर किया गया। घायलों में 4 महिलाओं की स्थिति अत्यंत नाजुक बनी हुई है।

नशे में था ड्राइवर

ग्रामीणों का सीधा आरोप है कि आरोपित चालक शराब के नशे में धुत था, जिसके कारण वह गाड़ी पर से नियंत्रण खो बैठा। पुलिस प्रशासन का कहना है कि आरोपी ड्राइवर को हिरासत में लेकर उसकी मेडिकल जांच कराई जा रही है।

अब ग्रामीण कर रहे चक्काजाम

सूपड़ा की घटना के विरोध में ग्रामीण पिपलियामंडी थाने पर प्रदर्शन कर रहे हैं। थाने के बाहर महिला और ग्रामीण को पुलिसकर्मी द्वारा धक्का दिए जाने के बाद ग्रामीणों का आक्रोश भड़क गया आक्रोशित ग्रामीणों ने हाईवे पर चक्काजाम कर दिया है। करीब 1 घंटे से चक्काजाम जारी है जिसके चलते हाईवे के दोनों तरफ वाहनों की लंबी-लंबी कतारें लग गई हैं, मौके पर मल्हारगढ़ एसडीओपी पिंटू बघेल, पिपलियामंडी थाना प्रभारी, मल्हारगढ़ थाना प्रभारी सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल मौजूद है, ग्रामीण मामले में कार्रवाई की मांग पर अड़े हुए हैं।

विश्व के एकमात्र 12 फीट ऊंचे परसुधारी शिव

माही की गूंज, मंदसौर।

जिला पुरा संपदा में भी काफी समृद्ध है। यहां कई ऐतिहासिक प्रतिमाएं भी निकली है और देश के कई संग्रहालयों में भी है। वहीं कई प्रतिमाएं मंदसौर जिले में भी है। यहां अद्भुत प्रतिमाओं में शामिल है विश्व की एकमात्र 12 फीट 6 इंच ऊंची परसुधारी शिव की प्रतिमा भी मंदसौर के जिला न्यायालय परिसर में स्थापित है।

इसका निर्माण 1500 साल पहले गुप्त औलिकर काल में हुआ था। इस प्रतिमा को भी मुस्लिम आक्रांताओं ने किले की दीवार में चुनवा दिया था जिसे 1926 में निकाला गया, तबसे यह जिला न्यायालय परिसर में ही स्थापित है।

गुप्त औलिकर काल (4-6 शताब्दी ईस्वी) में निर्मित प्रतिमा तत्कालीन भारत की सबसे विशाल 12 फीट 6 इंच (3 मीटर 81 सेमी) ऊंची प्रतिमा थी। परसुधारी शिव प्रतिमा के हाथों में शिव ने अनेक आयुध धारण कर रखे हैं इनमें त्रिशूल, भिक्षापात्र, खटवांग आदि महत्वपूर्ण है।

परसुधारी शिव की पूरे भारत में एकमात्र प्रतिमा मंदसौर में हैं। पुरातत्वविद कैलाशचंद्र पांडेय ने बताया कि प्रतिमा 13 वीं शताब्दी तक प्राचीन दशपुर (मंदसौर) में किसी देवालय में प्रतिष्ठित थी। इसके बाद आए मुस्लिम आक्रांताओं ने इसे खंडित कर किले की दीवार में चुन दिया था।

1926 में अंग्रेज पुरात्वविद बीडी ट्यूनर को किले के दक्षिणी भाग में उत्खनन के दौरान यह प्रतिमा दिखी। तब ग्वालियर राज्य के पुरातत्व अधिकारी एमबी गद्रे भी सौंधनी के विजय स्तंभ को व्यवस्थित करने में लगे थे। गद्रे ने इस प्रतिमा की पीदिका का निर्माण कर तत्कालीन सूबा कार्यालय के सामने स्थापित कराया।

एक तरफ के शिव गण नष्ट हो गए

अलंकृत जटा मुकुट, त्रिनेत्र वाली प्रतिमा के दाहिने हाथ में अपसूत्र व बायें हाथ में विशाल परसु धारण किए हुए है। प्रतिमा के दाएं-बाएं पुष्पा घाटी व त्रिशुल पुरुष का अंकन है। शिव के आयुध पुरुषों का अंकन गुप्त काल में प्रारंभ हो गया था। मंथना कुढार व दशपुर में कलाकारों ने यह प्रयोग किया है।

भारतीय प्रतिमा विज्ञान में त्रिशूल सह फरसे वाली संभवतः एकमात्र प्रतिमा है। प्रतिमा की प्रभावली में ऊपर से नीचे दाएं-बाएं 6-6 शिव गणों का अंकन था प्रतिमा का दाहिना भाग क्षतिग्रस्त होने के कारण बांयी तरफ के नष्ट हुए शिवगणों की कल्पना की जा सकती है। लगभग 30 साल पहले तत्कालीन कलेक्टर पीएस तोमर ने इसे सुरक्षित रखने के प्रतिमा के ऊपर पतरों का शेड बनवाया।

जहरीली शराब कांड का मास्टरमाइंड एनकाउंटर में घायल

सागर।

मध्य प्रदेश के सागर जिले के बंडा में हुए जहरीली शराब कांड में पुलिस को एक बड़ी कामयाबी मिली है। इस मामले के मुख्य आरोपियों में शामिल मनीष लोधी उर्फ यशवंत ठाकुर को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। मनीष लोधी पर 30 हजार रुपये का इनाम रखा गया था। उसके साथ आशीष साहू नाम के एक अन्य आरोपी को भी पुलिस ने हिरासत में लिया है। यह पूरी घटना मालथौन थाना क्षेत्र के नोनिया सेसई रोड घाटी पर हुई, जहां पुलिस और आरोपियों के बीच सीधी मुठभेड़ हुई।

पुलिस के मुताबिक जब टीम आरोपियों को पकड़ने पहुंची तो दोनों तरफ से गोलीबारी की नौबत आ गई। इस दौरान मनीष लोधी के पैर में गोली लगी और वह घायल हो गया। वहीं पुलिस से बचकर भागने की कोशिश में उसका साथी आशीष साहू भी घायल हो गया। मुठभेड़ के बाद पुलिस ने मौके की तलाशी ली, जिसमें दो देशी कट्टे, पांच खाली राउंड और एक बेसबॉल डंडा बरामद किया गया है। दोनों घायल आरोपियों को इलाज के लिए तुरंत अस्पताल ले जाया गया है।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि बंडा जहरीली शराब मामले में यह पुलिस की तीसरी मुठभेड़ है। इससे पहले भी इस मामले से जुड़े आरोपियों को पकड़ने के लिए पुलिस कई बार मुठभेड़ कर चुकी है। मनीष लोधी को इस पूरे कांड का मुख्य किरदार माना जा रहा है, इसी वजह से पुलिस उसे पकड़ने के लिए लगातार कोशिश कर रही थी। अब गिरफ्तारी के बाद पुलिस उससे पूछताछ करेगी ताकि पूरे मामले की तह तक पहुंचा जा सके।

पुलिस अभी भी अवैध शराब के इस पूरे नेटवर्क की जांच में जुटी हुई है। जांच एजेंसियां यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि इस नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं और हर आरोपी की क्या भूमिका रही है। आने वाले दिनों में इस मामले में और गिरफ्तारियां हो सकती हैं। लोगों में इस मामले को लेकर काफी गुस्सा और चर्चा बनी हुई है, क्योंकि जहरीली शराब से कई लोगों की जान को खतरा हुआ था।

नदी में तैरते देव-विमान, हजारों की भीड़ और आसमान में आतिशबाजी...

आगर मालवा।

आगर मालवा जिले के सोयतकलां में मंगलवार को डोल ग्यारस यानी जलझूलनी एकादशी का पर्व आस्था, भक्ति और लोकपरंपरा के रंग में मनाया गया। शाम होते-होते पूरा नगर भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में डूब गया। अलग-अलग मंदिरों से भगवान श्री बालकृष्ण के तीन दर्जन से अधिक बाल विग्रह आकर्षक देव-विमानों में विराजित होकर नगर भ्रमण पर निकले। हजारों श्रद्धालु इस अनोखे सामूहिक दर्शन के गवान बने।

सोयतकलां में डोल ग्यारस का यह आयोजन सिर्फ एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि वर्षों से चली आ रही ऐसी परंपरा है, जिसमें नगर के अलग-अलग मंदिरों में विराजित बालकृष्ण के विग्रह साल में एक बार एक साथ श्रद्धालुओं के बीच आते हैं। इस दौरान पूजा-अर्चना, महाआरती, भजन-कीर्तन और फिर कंठाल नदी में देव-विमानों का जल विहार होता है।

जलझूलनी एकादशी महोत्सव की शुरुआत शाम करीब 3 बजे हुई। अलग-अलग मंदिरों से सजाए गए देव-विमान सबसे पहले छत्री चौक पहुंचे। यहां भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना की गई।

इसके बाद सभी देव-विमानों को नगर के मध्य स्थित माधव चौक ले जाया गया। यहां भगवान के बाल स्वरूपों के सामूहिक दर्शन के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु जुटे।

माधव चौक पर तीन महाआरतियों के साथ भगवान का महाअभिषेक किया गया। आरती के दौरान पूरा चौक श्रद्धालुओं से भर गया. महिला, पुरुष, युवा और बच्चे सभी भगवान के बाल स्वरूपों के दर्शन करने पहुंचे। घंटियों की आवाज, भजन-कीर्तन और जय श्रीकृष्ण के जयघोष से पूरा माहौल भक्तिमय हो गया।

डोल ग्यारस की सबसे खास बात यहां होने वाला सामूहिक देव-दर्शन है। साल में एक बार सोयतकलां के अलग-अलग मंदिरों में विराजित श्री बालकृष्ण के विग्रह एक साथ देव-विमानों में सजकर नगर में निकलते हैं। इस बार भी तीन दर्जन से ज्यादा बाल विग्रह एक साथ देव-विमानों में विराजित किए गए। श्रद्धालुओं ने इन देव-विमानों की पूजा की और भगवान के सामने अपनी मनोकामनाएं रखीं।

स्थानीय लोगों के लिए यह आयोजन धार्मिक आस्था के साथ-साथ नगर की सांस्कृतिक पहचान से भी जुड़ा हुआ है। लेकिन इस पूरे आयोजन का सबसे खास दृश्य अभी बाकी था। नगर भ्रमण के बाद सभी देव-विमान भजन-कीर्तन करते हुए कंठाल नदी की ओर बढ़े। नदी तट पर पहुंचने के बाद एक बार फिर भगवान की आरती की गई। इसके बाद सदियों से चली आ रही परंपरा के मुताबिक देव-विमानों को कंठाल नदी के जल में तैराया गया।

नदी की लहरों पर सजे हुए देव-विमान और उनके बीच विराजित भगवान के बाल स्वरूप। आसपास खड़े हजारों श्रद्धालु. कहीं भजन-कीर्तन हो रहा था तो कहीं भगवान के जयकारे लग रहे थे। नदी में देव-विमानों का जल विहार इस आयोजन का सबसे आकर्षक हिस्सा रहा। श्रद्धालु इस दृश्य को अपने मोबाइल कैमरों में भी कैद करते नजर आए। यहां आस्था और लोकपरंपरा का ऐसा मेल दिखाई दिया, जो सोयतकलां के डोल ग्यारस उत्सव को अलग पहचान देता है।

कंठाल नदी में जल विहार के बाद देव-विमान फिर भजन-कीर्तन करते हुए पेड़ियाघाट स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर की ओर रवाना हुए। मंदिर परिसर में पहुंचने के बाद सामूहिक महाआरती की गई। भगवान का फिर से पूजन और अभिषेक हुआ। इसके बाद सभी देव-विमानों को उनके-अपने मंदिरों की ओर रवाना किया गया। इस दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ पूरे रास्ते बनी रही।

नदी किनारे रात में रोशनी का नजारा

धार्मिक आयोजन के बाद रात में सोयतकलां के आसमान ने भी अलग रंग दिखाया। स्टॉप डेम के पास नगर परिषद की ओर से भव्य रात्रिकालीन आतिशबाजी की गई। अंधेरे आसमान में रंग-बिरंगी रोशनी, नीचे नदी और आसपास मौजूद श्रद्धालुओं की भीड़। दिनभर चले धार्मिक आयोजन का यह आखिरी हिस्सा भी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा। नदी, देव-विमान, भजन-कीर्तन और फिर आतिशबाजी। डोल ग्यारस की रात सोयतकलां में धार्मिक आस्था और लोक उत्सव का ऐसा संगम दिखाई दिया, जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग जुटे।

सोयतकलां में जलझूलनी एकादशी की यह परंपरा बताती है कि कुछ पर्व सिर्फ कैलेंडर की तारीख नहीं होते। वे पीढ़ियों से चले आ रहे विश्वास, संस्कृति और सामूहिक जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। डोल ग्यारस भी इसी परंपरा का एक ऐसा उत्सव है, जब साल में एक बार अलग-अलग मंदिरों के बालकृष्ण एक साथ नगर में निकलते हैं, नदी में जल विहार करते हैं और पूरा शहर उनके स्वागत में भक्ति के रंग में रंग जाता है।

होटल कर्मचारी से 12 लाख रुपये लूटने का प्रयास, चाकू से हमला

माही की गूंज, खंडवा।

पंधाना रोड पर मंगलवार को होटल कर्मचारी से 12 लाख रुपये लूटने के प्रयास का मामला सामने आया। बाइक सवार दो बदमाशों ने पहले कर्मचारी को रोकने की कोशिश की। कर्मचारी के नहीं रुकने पर बदमाशों ने पीछा कर चलती बाइक पर चाकू से हमला किया और रुपयों से भरा बैग छीनने का प्रयास किया। कर्मचारी के विरोध तथा चाकू बैग में लग जाने से बदमाश अपने मंसूबे में सफल नहीं हो सके और मौके से फरार हो गए।

जानकारी के अनुसार इंदौर रोड स्थित होटल शगुन का कर्मचारी निश्चल भाटी मंगलवार को मानसिंग मिल तिराहे के पास स्थित आईसीआईसीआई बैंक से 12 लाख रुपये निकालकर बैग में रखकर बाइक से होटल लौट रहा था। इसी दौरान बाइक सवार दो युवकों ने उसका पीछा शुरू कर दिया।

निश्चल ने बताया कि बदमाशों ने रास्ते में उसकी बाइक रोकने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं रुका। छोटी आबना नदी के आगे त्रिमूर्ति पेट्रोल पंप के पास दोनों ने फिर उसे रोकने का प्रयास किया। इसी दौरान एक बदमाश ने चाकू से हमला कर रुपयों से भरा बैग छीनने की कोशिश की। चाकू बैग पर लग गया। निश्चल ने विरोध किया, जिसके बाद दोनों आरोपी मौके से भाग निकले।

घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली थाना प्रभारी प्रवीण आर्य पुलिस दल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने कर्मचारी से जानकारी लेने के बाद बैंक, मॉल और घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग की जांच की। एक दृश्य रिकॉर्डिंग में बाइक सवार दो युवक कर्मचारी का पीछा करते दिखाई दिए हैं। पुलिस उनकी पहचान करने में जुटी है।

सीएसपी अभिनव बारंगे ने बताया कि यह लूट के प्रयास का मामला है। सीसीटीवी रिकॉर्डिंग के आधार पर आरोपियों की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। पहचान होने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत, दो घायल

माही की गूंज, खरगोन।

चित्तौड़गढ़-भुसावल राजमार्ग पर तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से बाइक सवार तीन युवक हादसे का शिकार हो गए। दुर्घटना में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद सड़क पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान राजपुरा निवासी 17 वर्षीय आकाश पिता गुमान भिलाला के रूप में हुई है। घायल दोनों युवकों का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है। चिकित्सकों के अनुसार उनकी हालत में सुधार है।

बुधवार को सामने आए सीसीटीवी दृश्य में तीनों युवक बाइक से जाते दिखाई दे रहे हैं। इसी दौरान पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही तीनों युवक सड़क पर गिर पड़े। इसके बाद ट्रक का पिछला पहिया आकाश के ऊपर से गुजर गया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। बाद में उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई।

घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने ट्रक का पीछा कर उसे कुछ दूरी पर रोक लिया। सूचना मिलने पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और ट्रक को जब्त कर थाने ले गई। पुलिस ने ट्रक क्रमांक आरजी 09 जेसी 9795 को कब्जे में लिया है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार ट्रक नीमच से बिस्टान मक्का लेने जा रहा था। दुर्घटना के बाद चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। सीसीटीवी दृश्य और अन्य साक्ष्यों के आधार पर मामले की जांच जारी है।

छात्रावास के विद्यार्थियों ने की पुस्तकालय कक्ष की मांग

माही की गूंज, बड़वानी।

शासकीय बालक अनुसूचित जाति महाविद्यालय छात्रावास के विद्यार्थियों ने अध्ययन के लिए अलग पुस्तकालय कक्ष उपलब्ध कराने की मांग की है। बुधवार दोपहर विद्यार्थियों ने जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त कार्यालय पहुंचकर ज्ञापन सौंपा।

विद्यार्थियों ने छात्रावास के सामने वर्षों से खाली पड़े टीसीपीसी भवन को पुस्तकालय कक्ष के रूप में उपयोग में लाने की मांग की। विद्यार्थियों का कहना है कि इससे उन्हें अध्ययन के लिए बेहतर और शांत वातावरण उपलब्ध हो सकेगा।

छात्र सुमित ने बताया कि वर्तमान में छात्रावास में अध्ययन के लिए पर्याप्त और शांत माहौल नहीं मिल पाता है। विद्यार्थियों को अपने कमरों में ही पढ़ाई करनी पड़ती है, जिससे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी प्रभावित होती है।

विद्यार्थियों ने बताया कि अलग पुस्तकालय कक्ष उपलब्ध होने पर वे पुस्तकों एवं अध्ययन सामग्री का बेहतर उपयोग कर सकेंगे। साथ ही समूह अध्ययन और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी अधिक प्रभावी ढंग से कर पाएंगे।

विद्यार्थियों के अनुसार छात्रावास के सामने स्थित टीसीपीसी भवन कई वर्षों से खाली पड़ा है। यदि इस भवन का उपयोग पुस्तकालय कक्ष के रूप में किया जाए तो बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा।

छात्र नगरेस वास्कले ने बताया कि पुस्तकालय की मांग को लेकर पूर्व में भी कई बार ज्ञापन दिए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि भवन लंबे समय से अनुपयोगी पड़ा है, जबकि इसका उपयोग विद्यार्थियों के हित में किया जा सकता है।

विद्यार्थियों ने प्रशासन से मांग पर शीघ्र निर्णय लेकर अध्ययन के लिए पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध कराने की अपेक्षा जताई है।

15 करोड़ की लागत से बनेगा 50 बिस्तरीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय

माही की गूंज, खंडवा।

पंधाना विधानसभा क्षेत्र के ग्राम छैगांवदेवी में 50 बिस्तरीय जिला स्तरीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय भवन का भूमिपूजन राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के अवसर पर किया गया। लगभग 15 करोड़ 8 लाख 94 हजार रुपए की लागत से बनने वाले इस चिकित्सालय में आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

भूमिपूजन कार्यक्रम में सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल, विधायक छाया मोरे, विधायक कंचन तनवे, महापौर अमृता यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष पिंकी वानखेड़े सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

प्रस्तावित चिकित्सालय भवन 4070.35 वर्गमीटर क्षेत्रफल में निर्मित होगा। इसके निर्माण के लिए 1508.94 लाख रुपए की प्रशासनिक तथा 1201.38 लाख रुपए की तकनीकी स्वीकृति प्रदान की गई है। निर्माण कार्य की निविदा लागत 936.72 लाख रुपए निर्धारित की गई है। निर्माण कार्य का अनुबंध लक्ष्मीचन्द्र एंड कंपनी, ग्वालियर को दिया गया है। कार्यादेश 30 जुलाई 2026 को जारी किया गया था तथा निर्माण पूर्ण करने की संभावित तिथि 30 जुलाई 2028 निर्धारित की गई है।

भूतल पर पंजीयन कक्ष, अभिलेख कक्ष, चिकित्सा अभिलेख कक्ष, 6 बिस्तरों का आकस्मिक चिकित्सा वार्ड, चिकित्सक कक्ष, प्रसव पूर्व एवं प्रसूति कक्ष, शल्य चिकित्सा कक्ष, शल्य चिकित्सा पूर्व एवं पश्चात कक्ष, 4 बिस्तरों का वार्ड, 10 बिस्तरों का महिला वार्ड तथा औषधि भंडार कक्ष बनाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त 6 बाह्य रोगी विभाग कक्ष, फिजियोथेरेपी कक्ष, रसोईघर तथा मुख्य चिकित्सा अधिकारी कक्ष का भी प्रावधान रहेगा।

प्रथम तल पर परीक्षण प्रयोगशाला, आवासीय चिकित्सक कक्ष, 5 बिस्तरों का वार्ड, महिला एवं पुरुष पंचकर्म कक्ष, 4 बाह्य रोगी विभाग कक्ष, नेत्र परीक्षण कक्ष तथा 15 बिस्तरों का सामान्य वार्ड बनाया जाएगा। चिकित्सालय में उपचार, जांच, पंचकर्म, फिजियोथेरेपी तथा अन्य चिकित्सा सेवाओं के लिए अलग-अलग व्यवस्थाएं उपलब्ध रहेंगी।

विधायक छाया मोरे ने कहा कि चिकित्सालय के निर्माण से क्षेत्र के ग्रामीणों को स्थानीय स्तर पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकेंगी। इससे आयुर्वेदिक उपचार के लिए अन्य शहरों पर निर्भरता कम होगी तथा आसपास के गांवों के लोगों को भी लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि आयुर्वेदिक चिकित्सा के विस्तार से ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाएं और अधिक सुलभ होंगी।

15 देशी पिस्टल के साथ पांच आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज, खरगोन।

गोगावां क्षेत्र में पुलिस ने अवैध हथियारों की तस्करी के मामले में पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से 15 देशी पिस्टल बरामद हुई हैं। बरामद हथियारों की कीमत करीब 2 लाख 25 हजार रुपए बताई गई है। पुलिस ने हथियारों के परिवहन में इस्तेमाल मारुति कार भी जब्त की है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बिट्टू सहगल ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि सफेद रंग की कार से कुछ लोग बिलाली से गोगावां फाटा होते हुए घुघरियाखेड़ी की ओर जा रहे हैं। सूचना के आधार पर गोगावां पुलिस ने घेराबंदी कर संदिग्ध कार को रोक लिया।

पुलिस ने कार की तलाशी ली तो उसमें 15 देशी पिस्टल बरामद हुईं। आरोपियों के पास इन हथियारों से संबंधित कोई वैध लाइसेंस या दस्तावेज नहीं मिला। पुलिस ने विष्णु चौहान, रोहित उर्फ बाबू, लवकुश चौहान, शैलेंद्र उर्फ गोलू और रामगोपाल उर्फ बिहारी को गिरफ्तार किया है।

पांचों आरोपियों के खिलाफ गोगावां थाने में शस्त्र अधिनियम की धारा 25(1) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

प्रारंभिक पूछताछ में आरोपियों ने पुलिस को बताया कि उन्होंने सिगनूर के एक व्यक्ति से हथियार खरीदे थे। पुलिस अब आरोपियों को पुलिस अभिरक्षा में लेकर हथियारों की आपूर्ति करने वाले व्यक्ति और पूरे नेटवर्क के संबंध में पूछताछ करेगी।

पुलिस के अनुसार लवकुश चौहान और रामगोपाल उर्फ बिहारी के खिलाफ पहले से शस्त्र अधिनियम सहित अन्य मामले दर्ज हैं। पुलिस मामले की जांच कर हथियारों के स्रोत और संभावित खरीदारों के संबंध में जानकारी जुटा रही है।

तेज बारिश, मंडी में 200 क्विंटल से अधिक मक्का भीगा

माही की गूंज, खरगोन।

बुधवार को अचानक मौसम में बदलाव के बाद दोपहर करीब 3 बजे तेज बारिश शुरू हो गई। लगभग 10 दिन बाद हुई यह बारिश करीब आधे घंटे तक जारी रही। बारिश के कारण शहर की सड़कों पर पानी बह निकला।

अनाज मंडी में खरीदी के बाद खुले परिसर में रखा 200 क्विंटल से अधिक मक्का बारिश में भीग गया। बारिश शुरू होते ही व्यापारियों ने तिरपाल डालकर अनाज को सुरक्षित करने का प्रयास किया।

मानसून का अंतिम सप्ताह चल रहा है। जिले में अब तक 29 इंच से अधिक बारिश दर्ज की जा चुकी है, जबकि जिले की औसत वार्षिक बारिश 32.6 इंच है। मौसम विभाग ने 24 सितंबर से अगले तीन दिनों तक प्रदेश के कई हिस्सों में तेज बारिश की संभावना जताई है।

आगे भी तेज बारिश होने की स्थिति में किसानों की चिंता बढ़ गई है। किसानों का कहना है कि खेतों में तैयार कपास की फसल को बारिश से नुकसान हो सकता है। इससे तैयार फसल के भीगने और गुणवत्ता प्रभावित होने की आशंका है।

चुनावी चंदे के मामले में सियासी दल हों जवाबदेह

अशोक लवासा

बीबीसी की हालिया खोजी खबर में छह पंजीकृत किंतु अमान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों (आरयूपीपी) को मिले भारी-भरकम चंदे के बारे में जांच ने भारतीय राजनीति का जाना-पहचाना लेकिन दिलचस्प पहलू उजागर किया है। ये वह बुराई है जो चंहु ओर व्याप्त है। सियासी दल और उन्हें फायदा देने वाले लोग इस गठजोड़ से फलते-फूलते हैं, भले यह निंदनीय, गैर-कानूनी व परेशानीजनक लगे।

इससे पहले, 18 जुलाई, 2025 को एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने एक रिपोर्ट जारी की थी, जिसमें पाया गया कि वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान पंजीकृत किंतु अमान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की घोषित आय में 223 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। रिपोर्ट कहती है, उक्त श्रेणी में आते 2764 दलों में से केवल 739 ने ही उस साल के अपने वित्तीय रिकॉर्ड चुनाव आयोग को सौंपे थे, जो कानून अनुसार राजनीतिक पार्टियों के भविष्य व भाग्य का एकमात्र विधाता है। 'चुनाव प्रणाली को साफ-सुथरा बनाना' शीर्षक से एक प्रेस नोट में, चुनाव आयोग ने (9 अगस्त 2025) कहा कि उसने 'चुनाव प्रणाली साफ-सुथरी बनाने की व्यापक और सतत रणनीति के तहत' 2854 पंजीकृत किंतु अमान्यता प्राप्त सियासी दलों में से 334 को सूची से हटा दिया। देखना दिलचस्प होगा कि क्या जिन छह पार्टियों की चर्चा हो रही है, वे चुनाव आयोग की इस 'सतत रणनीति' का हिस्सा हैं या नहीं।

16 अक्तूबर, 1994 को, चुनाव चिह्न (आरक्षण एवं आवंटन) आदेश, 1968 के तहत एक आदेश में, मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने 'देश के करीब सभी सियासी दलों –चाहे वे मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय पार्टियां थीं या पंजीकृत किंतु अमान्यता प्राप्त दल– में व्याप्त खराब कार्यप्रणाली' पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा "मुझे अभी तक एक भी ऐसी पार्टी नहीं मिली जो अपना कामकाज उसके अपने संविधान या नियमों-विनियमों में दिए प्रावधानों मुताबिक चला रही हो'। उस आदेश के जरिए, उन्होंने सभी दलों को अपना कामकाज ठीक करने के लिए 'नोटिस' दिया था और घोषणा की कि चुनाव आयोग 'मूक दर्शक' बनकर नहीं रहेगा। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 29-ए के तहत पंजीकरण उपरांत केंद्रीय चुनाव आयोग के दिशा निर्देशों में अनुच्छेद 3 (भाग 23वां) कहता है कि पंजीकरण के इच्छुक दल को अपने संविधान में बताना होगा कि वह पंजीकरण के 5 साल के भीतर चुनाव लड़ेगा व अगर कोई दल '6 साल लगातार चुनाव नहीं लड़े' तो वह 'मान्यता प्राप्त दलों' की सूची से हटा दिया जाएगा।'

'सूची से हटाने' (डीलिस्टिंग) का मतलब पंजीकरण रद्द करना नहीं है, क्योंकि चुनाव आयोग के पास ऐसा करने का हक नहीं है। इस तरह, पंजीकृत किंतु अमान्यता प्राप्त राजनीतिक दल भले ही 'मान्यता प्राप्त' न भी हों, फिर भी वे धारा 29-बी के तहत चंदा पाने और धारा 29-सी के तहत आयकर छूट के हकदार रहते हैं। 'मान्यता' का मामला 'चुनाव चिन्ह आदेश' के आदेश नं. 6 से तय होता है, जो चिन्ह आवंटित करने के उद्देश्य से 'मान्यता प्राप्त' और 'गैर मान्यता प्राप्त' राजनीतिक दलों' में अंतर करता है व उनके वर्गीकरण के नियम तय करता है।

इसलिए, चाहे कोई दल सूची से हटा दिया गया हो या 'अमान्यता प्राप्त' श्रेणी में आता हो, उसे चंदा पाने का हक रहता है। जांच का विषय है कि क्या ऐसे चंदे पर आयकर छूट मिलती रही, क्योंकि सूची से हटाने का मकसद ही उन्हें अयोग्य ठहराना है।

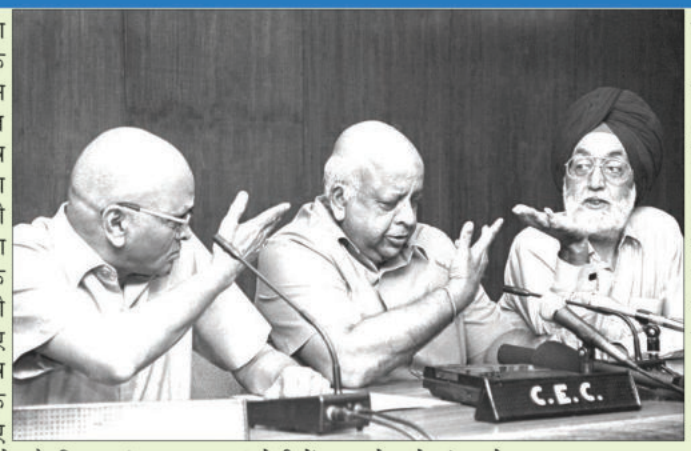

कॉमनवेल्थ ह्यूमन राइट्स इनिशिएटिव संस्था' में वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता वेंकटेश नायक की रिपोर्ट के अनुसार, 22 दलों के पास 2024 के आम चुनावों के दौरान कुल 18,742.31 करोड़ रुपये की रकम थी। इसमें चुनाव की घोषणा के समय उनके पास मौजूद फंड और चुनाव की घोषणा से लेकर चुनाव खत्म होने के बीच जुटाया 7,416.31 करोड़ रुपये का चंदा शामिल था। केंद्रीय चुनाव आयोग को सौंपे गए हिसाब-किताब के मुताबिक, चुनाव उपरांत इन दलों के हाथ में 14,848.46 करोड़ रुपये था (नकदी, बैंक खातों और एफडी में रखा पैसा शामिल) जोकि चुनाव संबंधित खर्चों पर 3,861.57 रुपये लगने के बाद बचा था।

अध्ययन में पाया गया कि बीते दशक में, राजनीतिक चंदे पर कर छूट के कारण सरकारी खजाने को 11,813 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इस मामले में निजी दानदाताओं और हिंदू अविभाजित परिवारों ने सियासी दलों को चंदा देने में कॉर्पोरेट्स को पीछे छोड़ दिया। वित्त वर्ष 2022-23 में, व्यक्तिगत दानदाताओं ने 2,275.85 करोड़ रुपये छूट का दावा पेश किया, जो कॉर्पोरेट द्वारा किए 514.4 करोड़ रुपये और फर्मों/एसोसिएशन के 115.71 करोड़ रुपये के दावों से कहीं ज़्यादा था। राजनीतिक दलों को मिला घोषित चंदा 2015-16 में 714 करोड़ रुपये (43 दल) से बढ़कर 2023-24 में 7,203 करोड़ रुपये (27 दल) हो गया। तथापि, कुल चंदा रकम (नौ वर्षों में 28,287 करोड़ ररुपये) में से केवल 41.76 प्रतिशत पर ही कर छूट का दावा किया, जिससे शेष 58 फीसदी बारे सवाल उठते हैं। नायक हैरान हैं कि 'कर छूट की इच्छा रखे बिना चंदा देने को उन्हें क्या चीज़ प्रेरित करती है? पारदर्शिता की कमी के कारण जवाब अस्पष्ट है।'

'इलेक्टोरल बॉन्ड' के नाम पर 2018 में सत्ताधारी दल जो सुधार लाया था, उसने गोपनीयता की मोटी परत चढ़ा दी, जिससे दलों को चंदे का पूरा परिदृश्य धुंधला कर डाला। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने 2024 में इसे असंवैधानिक घोषित कर दिया, लेकिन बाद में सामने आई चंदा संबंधी जानकारी ने ऐसे प्रश्न खड़े किए जिनका जवाब अभी तक नहीं मिला। अधिकांश पंजीकृत किंतु अमान्यता प्राप्त दल इलेक्टोरल बॉन्ड पाने के योग्य ही नहीं थे क्योंकि यह सुविधा उन दलों तक सीमित थी जिन्होंने हालिया लोकसभा या विधानसभा चुनावों में न्यूनतम 1 फीसदी वोट अंश पाया। तो फिर ये चंदा किसने व क्यों दिया?

राजनीतिक दलों को पारदर्शिता बरतने में बहुत कम रुचि है। वे केंद्रीय सूचना आयोग के 2013 के उस आदेश को टालने को एकजुट हो गए, जिसके तहत उन्हें 'सूचना अधिकार अधिनियम' के दायरे में लाया गया था। आयकर विभाग भी शायद सियासी दलों के खातों की जांच-पड़ताल को उतनी प्राथमिकता नहीं देता, जितनी आम करदाता के खातों को देता है। चुनाव आयोग के पास ऐसा करने के लिए न तो हक हैं, न इच्छाशक्ति और न ही संसाधन।

अतएव, यह सुप्रीम कोर्ट की ज़िम्मेदारी बन जाती है कि वह इलेक्टोरल बॉन्ड और कथित 'लेन-देन' मामले की पड़ताल अदालती निगरानी में करने का आदेश दे। इसमें उन 'छोटे' दलों का मामला भी शामिल हो जिन्हें भारी चंदा मिला और उन्होंने खर्चा दिखाया, जबकि चुनावी प्रक्रिया में सरगर्म नहीं दिखे। अनुच्छेद 324 के तहत, चुनाव आयोग राजनीतिक दलों को आदेश दे कि वे नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक या उसके द्वारा नामित व्यक्ति से अपने खाते ऑडिट करवाएं। वह चुनावों के दौरान दलों के खर्च पर सीमा लगाने पर भी विचार करे। चंदे पर कर छूट को खर्च सीमा से जोड़ा जाए। शेष तमाम किस्म के चंदा, जिनसे दल समृद्ध होते हैं, उन पर पूरा कर लगना चाहिए।

जो पंजीकृत किंतु अमान्यताप्राप्त दल निर्धारित दिशा निर्देशों के अनुसार चुनाव नहीं लड़ते, उन्हें 'सूची से हटाने' के लिए चुनाव आयोग एक स्वचालित प्रक्रिया विकसित करे, और केंद्रीय डिजिटल पोर्टल बनाए, जिस पर सभी पंजीकृत दल अपना-अपना वित्तीय डेटा अपलोड कर सकें।

केंद्रीय चुनाव आयोग को अपनी ऊर्जा असली मतदाताओं को मतदाता सूची से निकाल बाहर कर 'शुद्धीकरण' करने के बजाय चुनावी माहौल 'साफ़-सुथरा' बनाने में लगानी चाहिए। तब तक, 'हम भारत के लोग' नेपाल की सुरंगों में फंसे लोगों की तरह 'हुनुहुंचा' (हम यहां हैं) चीखते रह जाएंगे।

सीआईडी बनकर ठगी! बुजुर्ग को रोका

माही की गूंज, धार/राजगढ़।

शहर में ठगी का एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। नरटोडी चौराहे के पास कथित तौर पर सीआईडी पुलिसकर्मी बनकर पहुंचे दो अज्ञात बदमाशों ने एक बुजुर्ग को पुलिसिया रौब दिखाकर पहले डराया और फिर उसके गले की सोने की चेन और अंगूठी उतरवा ली। इसके बाद जेवरों की पुड़िया बनाकर बुजुर्ग को वापस थमा दी और मौके से फरार हो गए। घर पहुंचकर पुड़िया खोली तो उसमें असली सोने के जेवरों की जगह आर्टिफिशियल चेन और चांदी जैसी धातु की अंगूठी मिली।

ऐसे दिया वारदात को अंजाम

पुलिस के अनुसार, 22 सितंबर की सुबह करीब 7ः35 बजे सरदार सिंह सोलंकी (66), निवासी जमाई कॉलोनी राजगढ़, बस स्टैंड से फूलमाला लेकर अपने घर की ओर जा रहे थे। इसी दौरान नरटोडी मेन रोड पर एक मोटरसाइकिल पर सवार दो व्यक्ति उनके पास पहुंचे और उन्हें रुकने के लिए कहा।

बताया गया है कि दोनों ने खुद को सीआईडी पुलिस बताया। आरोपियों ने पुलिस ड्रेस में अपना फोटो भी फरियादी को दिखाया। इसी दौरान उन्होंने एक व्यक्ति को चाकू मारने की बात कहते हुए ऐसा माहौल बनाया, जिससे फरियादी भयभीत हो गया। इसके बाद आरोपियों ने कहा कि सोना-चांदी पहनकर घूमना मना है और ऐसा करने पर 10 हजार का जुर्माना लगेगा।

पहले तीसरे व्यक्ति की चेन उतरवाई, फिर बुजुर्ग को बनाया निशाना

पुलिस के मुताबिक, इसी दौरान मोटरसाइकिल से एक तीसरा व्यक्ति भी वहां आया। उसने अपने गले में पहनी चेन उतारकर दोनों आरोपियों को दे दी और फिर मोटरसाइकिल से वहां से चला गया। इसके बाद दोनों आरोपियों ने फरियादी से भी गले की सोने की चेन और सोने की अंगूठी उतारकर देने को कहा। बुजुर्ग ने डर के कारण दोनों जेवर उतारकर आरोपियों को दे दिए।

पुड़िया में असली जेवर गायब, नकली सामान थमा गए

आरोपियों ने दोनों जेवरों को एक पुड़िया में रखा और फरियादी को वापस देते हुए कहा कि अपनी चेन और अंगूठी संभालकर रख लो। इसके बाद दोनों मोटरसाइकिल से वहां से फरार हो गए। जब पुड़िया खोली गई तो उसमें असली सोने की चेन और अंगूठी की जगह सोने जैसी दिखने वाली आर्टिफिशियल चेन और चांदी जैसी धातु की रिंग मिली। इस तरह आरोपियों ने पुलिसकर्मी होने का झांसा देकर बुजुर्ग के साथ धोखाधड़ी की।

पुलिस ने दर्ज किया मामला

फरियादी के थाने पहुंचने पर पुलिस ने मामले में प्रकरण दर्ज किया है। उपलब्ध पुलिस विवरण के अनुसार मामला राजगढ़ थाने में अपराध क्रमांक 449/26 के तहत दर्ज किया गया है। मामले में धारा 318(4) बीएनएस का उल्लेख है। पुलिस के अनुसार आरोपियों की संख्या तीन अज्ञात बताई गई है।

नशामुक्ति एवं सड़क सुरक्षा के लिए जनजागरूकता

माही की गूंज, आलीराजपुर।

कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय एनसीओआरडी, चिन्हित अपराध एवं जिला सड़क सुरक्षा समिति की संयुक्त बैठक एनआईसी कक्ष में आयोजित की गई। बैठक में जिले में नशे की रोकथाम, अवैध शराब पर प्रभावी नियंत्रण, सड़क सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा चिन्हित अपराधों से संबंधित प्रकरणों की समीक्षा की गई। कलेक्टर श्रीमती माथुर ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में रेल ब्रिज एवं अन्य संवेदनशील स्थानों के समीप आवश्यकतानुसार संकेतक बोर्ड लगाए जाएं। रात्रि के समय सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए सड़क एवं पुल-पुलियाओं पर रेडियमयुक्त संकेतक एवं चिन्ह लगाए जाएं, ताकि वाहन चालकों को अंधेरे में मार्ग स्पष्ट रूप से दिखाई दे और दुर्घटनाओं की संभावना कम हो।

उन्होंने नशामुक्ति अभियान के तहत जिले में व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार एवं जनजागरूकता गतिविधियां संचालित करने के निर्देश पुलिस विभाग को दिए। उन?होने पुलिस विभाग के अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि आबकारी विभाग के साथ समन?नवय स?थापित कर अवैध शराब के निर्माण, परिवहन एवं विक्रय पर प्रभावी कार्रवाई करते हुए रोकथाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

कलेक्टर ने सामाजिक न्याय विभाग को पुलिस एवं संबंधित विभागों के समन्वय से सड़क सुरक्षा एवं नशामुक्ति विषय पर नुक्कड़ नाटक एवं अन्य जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए, ताकि आमजन, विशेषकर युवाओं में नशे के दुष्परिणामों एवं यातायात नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके। उन्होने जिला परिवहन अधिकारी को निर्देशित किया किया कि ओवरलोडिंग वाहनों एवं क्षमता से अधिक सवारी वाहनों पर चालानी कार्यवाही को बढाने के निर्देश दिए।

बैठक में पुलिस विभाग को मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत आयोजित होने वाले शिविरों में विभागीय कैंप लगाकर आमजन को पुलिस से संबंधित सेवाओं एवं योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। इस दौरान चिन्हित अपराधों से संबंधित प्रकरणों की भी समीक्षा की गई तथा लंबित प्रकरणों में नियमानुसार प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती ज्योति आमठ बघेल, अपर कलेक्टर सोहन कनास सहित संबंधित विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत होगा शिविर का आयोजन

माही की गूंज, अलीराजपुर। कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर ने बताया कि जनपद पंचायत उदयगढ़ के ग्राम कुंडलवासा में दिनांक 25 सितबंर 2026 को मुख्यमंत्री जन विश्वास अभियान के तहत शिविर का आयोजन किया जाएगा।

शिविर में जनपद पंचायत उदयगढ़ के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायतों कुंडलवासा, उदयगढ़, अरण्डिफलिया, कोटड़ा, थांदला, उत्ती, बेकलगांवबड़ी, बरड़ा, कोल्याबरडा, पानगोला, टेरका, बावड़ी खुर्द, धामन्दा, जाम्बुखेड़ा, जामलीबड़ी,कानाकाकड़ एवं खण्डालाराव के निवासियों की समस्याओं का निराकरण किया जाएगा। शिविर के माध्यम से ग्रामीणों की समस्याओं को संबंधित विभागों के अधिकारियों द्वारा मौके पर सुना जाएगा तथा पात्र हितग्राहियों को शासन की योजनाओं एवं सेवाओं का लाभ दिलाने की दिशा में आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर श्रीमती माथुर ने संबंधित अधिकारियों को शिविर में उपस्थित रहकर ग्रामीणों की समस्याओं का प्राथमिकता से निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने क्षेत्र के ग्रामीणों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में शिविर में पहुंचकर अपनी समस्याओं एवं मांगों से संबंधित आवेदन प्रस्तुत करें और मुख्यमंत्री जन विश्वास अभियान का लाभ उठाएं।

एसडीएम को ज्ञापन देने पहुंचे पानी की समस्या से परेशान किसान

माही की गूंज, उज्जैन।

जिले के घट्टिया क्षेत्र के किसान सिंचाई के पानी को लेकर आ रही समस्या से परेशान चल रहे हैं। इसको लेकर बुधवार को सैकड़ो किसान प्रदर्शन पर उतर गए। सभी ने एसडीएम राजाराम करजरे को ज्ञापन देकर कोयलखेड़ी तालाब में नर्मदा नहर का पानी तुरंत छोड़ने की मांग की है।

किसानों के बीच लंबे समय से पानी को लेकर समस्या चल रही है। कई बार मांग करने के बाद भी समाधान नहीं हुआ। परेशान होकर आज यह एसडीएम को ज्ञापन देने के लिए पहुंचे। ज्ञापन सौंपने के साथ ही किसानों ने चेतावनी दी है कि अगर 7 दिनों के अंदर उनकी समस्या का समाधान नहीं होगा, तो वह उज्जैन आगर नेशनल हाईवे पर चक्काजाम करेंगे।

कोयलखेड़ी तालाब से जुड़े कई गांव

किसानों ने बताया कि कोयलखेड़ी तालाब से आसपास के क्षेत्र के 10 से 15 गांव जुड़े हुए हैं। अगर तालाब में समय से नर्मदा नहर का पानी नहीं पहुंचाया गया तो रबी की फसल की बुवाई और पैदावार पर सीधा असर होगा। किसानों ने जल संसाधन विभाग के अधिकारियों से नहर तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था की जांच कराने की मांग की है।

रबी की फसल पर संकट

इस साल क्षेत्र में बारिश कम देखने को मिली है। इस वजह से किसान पहले से ही चिंता में हैं। सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी नहीं है। रबी का सीजन शुरू हो गया है। इसके अलावा गेहूं चना और दूसरी सरसों की बुवाई की तैयारी भी चल रही है। ऐसे में अगर पानी नहीं मिलेगा तो आर्थिक नुकसान हो जाएगा।

चक्काजाम की चेतावनी

एसडीएम को ज्ञापन सौंपने के साथ ही किसानों ने प्रशासन को 7 दिन का समय दिया है। उन्होंने कहा है कि इस दौरान अगर पानी नहीं छोड़ा गया और समस्या का समाधान नहीं हुआ तो उज्जैन आगर नेशनल हाईवे पर चक्का जाम किया जाएगा।

खाद्य सामग्री की गुणवत्ता जांच के लिए संयुक्त दल गठित

माही की गूंज, आलीराजपुर।

आगामी त्यौहारों एवं लोक स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए मिलावटी खाद्य एवं पेय सामग्री के निर्माण, भंडारण, विक्रय एवं उपयोग पर प्रभावी रोकथाम के लिए जिला स्तरीय सलाहकार समिति की बैठक कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा वर्ष 2025-26 एवं वर्ष 2026-27 में की गई गतिविधियों एवं कार्यवाहियों की जानकारी प्रस्तुत की गई। इस दौरान खाद्य पदार्थों के नमूने लिए जाने, उनकी जांच तथा नियमानुसार की गई कार्रवाई से भी अवगत कराया गया।

बैठक में कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर ने आगामी त्यौहारों को ध्यान में रखते हुए जिले में खाद्य एवं पेय पदार्थों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रभावी निरीक्षण एवं जांच कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मिलावटी खाद्य सामग्री के निर्माण, भंडारण एवं विक्रय पर नियमानुसार सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए तथा खाद्य सुरक्षा मानकों के उल्लंघन के मामलों में तत्काल कार्रवाई की जाए।

कलेक्टर श्रीमती माथुर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि खाद्य सामग्री की जांच के लिए अनुविभागीय अधिकारी, जिला आपूर्ति अधिकारी, नापतौल विभाग एवं अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ संयुक्त दल गठित कर नियमित रूप से निरीक्षण एवं जांच की कार्रवाई की जाए। विशेष रूप से होटल, रेस्टोरेंट, मिठाई दुकानों, खाद्य प्रतिष्ठानों एवं अन्य खाद्य कारोबारियों पर विशेष निगरानी रखते हुए खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन सुनिश्चित कराया जाए।

उन्होंने कहा कि खाद्य पदार्थों में मिलावट की रोकथाम के साथ आमजन एवं खाद्य कारोबारियों को जागरूक करना भी आवश्यक है। इसके लिए विभिन्न स्थानों पर जागरूकता शिविर आयोजित किए जाएं तथा होटल, रेस्टोरेंट, मिठाई एवं अन्य खाद्य व्यवसाय से जुड़े संचालकों को खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता एवं निर्धारित मानकों के संबंध में आवश्यक जानकारी दी जाए। उन्होंने खाद्य कारोबारियों को निर्धारित मापदंडों का पालन करने तथा उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण एवं सुरक्षित खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए। बैठक में खाद्य सुरक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

यूपीआई शुल्क के विरोध में नागदा के व्यापारियों का प्रदर्शन

माही की गूंज, उज्जैन।

23 सितंबर यानी बुधवार को पूरे मध्य प्रदेश में नो यूपीआई डे रखा गया है। व्यापारी अपने ग्राहकों से 2 रुपये से ज्यादा ऑनलाइन नहीं लेंगे। इसका समर्थन उज्जैन जिले के नागदा के किराना व्यापारी संघ ने भी किया है। व्यापारी संघ से जुड़े हुए व्यापारियों की ओर से जागरूकता अभियान चलाया गया। यह सभी अलग-अलग व्यापारिक क्षेत्र में पहुंचे और दुकानदारों को आंदोलन की जानकारी दी। सभी से सहयोग करने को कहा गया है।

व्यापारियों का क्या कहना

यूपीआई को लेकर जारी किए गए नए नियम से व्यापारी नाराज नजर आ रहे हैं। उनका कहना है कि प्रधानमंत्री मोदी के डिजिटल इंडिया अभियान पर भरोसा जताते हुए। उन्होंने यूपीआई लेनदेन को अपनाया था। लेकिन अब ऐसा लग रहा है कि अभियान का समर्थन उन्हें ही भरी पड़ रहा है। व्यापारियों ने साफ कहा कि वो ऑनलाइन पेमेंट का विरोध नहीं कर रहे हैं, वो केवल इस पर लग रहे शुल्क का विरोध कर रहे हैं।

स्कैनर ढक कर जताया विरोध

अपने इस जागरूकता अभियान के दौरान व्यापारियों ने अपनी दुकानों में लगे क्यूआर कोड स्कैनर पर काला कपड़ा बांध कर सांकेतिक रूप से विरोध दर्ज करवाया। इस दौरान सभी यूपीआई शुल्क वापस लो के बारे लगाते दिखाई दिए।

पूरे प्रदेश में आंदोलन

यूपीए शुल्क के विरोध का ये आंदोलन केवल नागदा नहीं बल्कि पूरे प्रदेश में चल रहा है। एमपी के विभिन्न व्यापारिक संगठनों की ओर से आज नो यूपीआई डे मनाने का ऐलान किया गया है। इस दौरान क्यूआर कोड और साउंड बॉक्स को ढककर विरोध जताया जाएगा। नागदा में भी व्यापारी संघ के पदाधिकारियों ने सभी से एकजुट होकर इस आंदोलन का हिस्सा बनने की अपील की है।

क्या है सरकार का कहना

नए नियमों को लेकर सरकार क्या कहना है कि एमडीआर शुल्क कुछ विशेष व्यावसायिक लेनदेन पर ही लागू किया जाएगा। 2000 तक के भुगतान छोटे व्यापारियों के लिए बिना एमडीआर के शुल्क मुक्त रहेंगे। वहीं व्यक्तिगत लेनदेन भी इस शुल्क से मुक्त रखा गया है।

कालभैरव मंदिर में साधु वेशधारी का हंगामा

माही की गूंज, उज्जैन।

कालभैरव मंदिर में मंगलवार सुबह साधु वेशधारी ने हंगामा मचाया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इन लोगों ने मंदिर के मुख्य द्वार को बाधित करते हुए दर्शनार्थियों को परेशान किया।मामले की शिकायत पुलिस को की गई। मौके पर पहुंचे पुलिस अधिकारियों से भी तथाकथित साधुओं ने विवाद किया। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है।

जानकारी के अनुसार डोल ग्यारस पर स्थानीय के अलावा देशभर से हजारों भक्त भगवान कालभैरव के दर्शन करने मंदिर पहुंचे थे। शाम को भगवान कालभैरव की सवारी निकलना थी, इसलिए मंदिर में तैयारियां भी चल रही थी। इसी दौरान कुछ साधु वेशधारी लोगों ने मंदिर के मुख्य द्वार पर बेरिकेड लगाकर बेवजह हंगामा शुरू कर दिया।

मंदिर में प्रवेश नहीं करने दे रहे थे

यह लोग दर्शनार्थियों को मंदिर में प्रवेश नहीं करने दे रहे थे। हंगामे की स्थिति को देखते हुए आसपास के किसी व्यक्ति ने पुलिस को सूचना दी। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और व्यवस्था बनाने का प्रयास किया। पुलिस अधिकारियों को भी विवाद और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। हालांकि पुलिस ने अब तक कोई कार्रवाई नहीं की है।

सेवा संकल्प यात्रा

माही की गूंज, धार।

वडनगर से वाराणसी निकली 'सेवा संकल्प यात्रा' मनावर से दूसरे दिवस के लिए पुनः प्रारंभ हुई। इस दौरान यात्रा के शासकीय सांदीपनि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बाकानेर पहुंचने पर वडोदरा सांसद डॉ. हेमांग जोशी ने सेवा संकल्प यात्रा में चल रहे सेवा यात्रियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके साथ मिलकर शाला परिसर में पौधारोपण किया। इस दौरान सांसद जोशी ने सभी को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए कहा कि हमें अपने एवं परिजनों के जन्म दिवस, परिजनों की पुण्यतिथि, विवाह वर्षगांठ एवं अन्य मांगलिक अवसरों पर अनिवार्य रूप से पौधारोपण कर उसे स्मृति के रूप में सहेजना चाहिए। इस दौरान सांसद जोशी ने सेवा यात्रियों के साथ बकानेर में ही बोरी बंधान का कार्य भी किया। इस कार्य को करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में वर्षा के जल को सहेजना हम सभी की महत्ती जिम्मेदारी है। अगर हम वर्ष के जल को सहेंगे तो धरती का जलस्तर बढ़ेगा। मोनी बाबा आश्रम में हितग्राहियों के साथ किया सहभोजसेवा संकल्प यात्रा के ग्राम धरमपुरी पहुंचने पर मोनी बाबा के आश्रम में वडोदरा सांसद श्री हेमांग जोशी एवं अन्य गणमान्यजनों ने केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों के परिवार के साथ भोजन भी किया। इस दौरान वडोदरा सांसद जोशी ने कहा कि, रास्ते की सारी थकान घर का भोजन खाने के साथ ही मिट गई है। आज उन्होंने जो भोजन खिलाया है उसका उन पर ऋण है, अगर ईश्वर उन्हें यह ऋण चुकाने का मौका देंगे तो वह अवश्य ही यह ऋण चुकाएंगे। भोजन के पश्चात हितग्राहियों से चर्चा के दौरान सांसद ने हितग्राहियों से केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं के संबंध में जानकारी भी प्राप्त की। इस दौरान उन्हें बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से गरीबों के पक्के मकान का सपना भी सरकार हो गया है वही एक महिला हितग्राही ने बताया कि पहले वह दूर से अपने सिर पर मटकी रखकर पानी लाती थी। वहीं नल जल योजना के माध्यम से अब अपने घर में ही उन्हें नल से जल मिल रहा है।सेवा यात्रा का हुआ स्वागत जेसीबी मशीन से की गई फूलों की वर्षासेवा संकल्प यात्रा जब धार जिले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र से गुजरी तो यात्रा का स्वागत जेसीबी मशीन के माध्यम से फूलों की वर्षा कर किया गया।

देवी अंबिका की मूर्ति के शिल्पकार का मिला नाम

माही की गूंज, धार।

राजा भोज के समय धार में मूर्ति बनाने वाले एक शिल्पकार और अभिलेख उकेरने वाले कारीगर के नाम करीब 1000 साल पुराने अभिलेख से सामने आए हैं। इससे भोजकालीन धार, वाग्देवी और भोजशाला से जुड़े इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी सामने आती है।

लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में रखी धार की अंबिका की मूर्ति के पाये पर उत्कीर्ण अभिलेख के नए अध्ययन में मणथला और शिवदेव के नाम मिले हैं। अभिलेख के अनुसार मणथला ने अंबिका की मूर्ति बनाई थी, जबकि शिवदेव ने उस पर अभिलेख उकेरा था।

यह अभिलेख विक्रम संवत 1091 यानी 1034-35 ईस्वी का है। शोधकर्ता के अनुसार यह राजा भोज के शासनकाल के मध्य का समय था। अभिलेख में केवल अंबिका की मूर्ति की जानकारी ही नहीं है, बल्कि इसमें वाग्देवी की पहले स्थापना और उसके बाद तीन जैन प्रतिमाओं की स्थापना का भी उल्लेख मिलता है। इसके बाद अंबिका की मूर्ति बनाए जाने की बात कही गई है। इस तरह एक ही अभिलेख भोजकालीन धार में वाग्देवी और जैन परंपरा से जुड़ी प्रतिमाओं की स्थापना तथा अंबिका की मूर्ति बनाए जाने का महत्वपूर्ण प्रमाण देता है।

घिसे अभिलेख को फिर पढ़ा

यह जानकारी ब्रिटेन की कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस की शोध पत्रिका जर्नल आफ द रायल एशियाटिक सोसायटी में प्रकाशित माइकल विलिस के शोधपत्र से सामने आई है। शोधपत्र का शीर्षक 'धार, भोज एंड सरस्वती ः एन ओल्ड प्राब्लम रीविजिटेड' है और यह हाल ही में आनलाइन प्रकाशित हुआ। शोधपत्र में ब्रिटिश म्यूजियम की इस मूर्ति के पाये (आधार) पर उत्कीर्ण अभिलेख का नए सिरे से अध्ययन किया गया है।

अभिलेख का एक पाठ पहले 2012 में प्रकाशित हो चुका था

शोधकर्ता के अनुसार, इस अभिलेख का एक पाठ पहले 2012 में प्रकाशित हो चुका था, लेकिन पत्थर की सतह घिस जाने और उस पर पड़ी तिरछी दरारों के कारण इसे पढ़ने में कठिनाई थी। नए अध्ययन में 'इंडोस्क्रिप्ट' जैसे डिजिटल उपकरण और विशेष रूप से तैयार की गई तस्वीर की मदद से अभिलेख का दोबारा अध्ययन किया गया। इसके बाद इसके पाठ की नई व्याख्या की गई।

महिला की आकृति से खुला अध्ययन का नया रास्ता

नए अध्ययन की शुरुआत मूर्ति के आधार के एक हिस्से पर बनी घुटने के बल बैठी छोटी महिला आकृति से हुई। शोधकर्ता ने मध्यकालीन भारतीय परंपरा के आधार पर इसे मूर्ति की दाता यानी वह महिला जिसने इस प्रतिमा की स्थापना कराई थी, माना। इसी आकृति के आधार पर अभिलेख को फिर से पढ़ा गया और दाता का नाम सोसा सामने आया। शोधकर्ता के अनुसार सोसा जैन धर्म की विद्याधरी शाखा से जुड़ी महिला अनुयायी थीं। अभिलेख के अंतिम हिस्से में बताया गया है कि अंबिका की यह प्रतिमा सहिरा के पुत्र मणथला ने बनाई, जबकि शिवदेव ने उस पर अभिलेख उकेरा।

क्या है 'इंडोस्क्रिप्ट'?

इंडोस्क्रिप्ट एक डिजिटल शोध उपकरण है, जिसकी मदद से प्राचीन अभिलेखों की लिपि और अक्षरों को पहचानने तथा पुराने या अस्पष्ट लेख को पढ़ने में सहायता मिलती है।

शराबी और गंजेड़ियों की दोस्ती, तलवार के हमले के साथ हुआ आपसी विवाद, पुलिस ने भी दिया बढ़ावा

माही की गूंज, खवासा।
हरिश भटेवरा

कहते हैं शराब या गांजा का नशा जब किसी के दिमाग पर पूरी तरह से चढ़ जाए तो फिर न अपना और न पराया देखता है।

ऐसा ही एक मामला नशेड़ियों की आपसी दोस्ती के बीच सामने आया है। बाजना मार्ग पर स्थित एक मांसाहारी ढाबा संचालक जहां अवैध शराब के अड्डे का संचालन भी होता है। उक्त ढाबा संचालक शराब के नशे के साथ बताते हैं गांजा का नशा भी करता है। और उसकी गांजानुमा गंजेडियो से एक अच्छी दोस्ती ही नहीं बल्कि कोई दिन ही की चूक होती होगी जिस दिन गंजेडियो की यह चंडाल चौकड़ी गांजे की चिलम पीने हेतु इकट्ठे नहीं होते होंगे। यानी आए दिन खवासा में इनकी गहरी दोस्ती के साथ आपसी में बैठ गांजा फूंका जाता है कि चर्चा खवासा में है।

वही ये ही गंजेडियो के सात-आठ दोस्त महाकाल के दर्शन करने हेतु उज्जैन पिछले दिनों साथ-साथ गए। चर्चा है कि, गांजे का सेवन करने के बाद इन दोस्तों में किसी मामूली बात पर सफर के दौरान उज्जैन में ही विवाद आपसी में हो गया था। जिस पर ढाबा संचालक अपने एक-दो साथी के साथ गाड़ी लेकर बाकी अपने दोस्तों को उज्जैन में ही छोड़ आ गए थे।

जिसके चलते इन गंजेडियो के बीच हुआ मामूली विवाद यही नहीं थमा और जिन दोस्तों को छोड़कर उज्जैन आ गए थे वह अन्य संसाधन से खवासा पहुंचे। और बाद में जब उज्जैन गए थे उस वाहन का भाड़ा देने की बात पर पुनः बाजना रोड स्थित ढाबे पर पिछले शुक्रवार को बहस छिड़ी और जिन्हें उज्जैन छोड़कर आ गए थे उन दोस्तों ने गाड़ी का भाड़ा देने से इनकार किया। तो गंजेडियो में पुनः बहस छिड़ गई और ढाबा संचालक के एक रिश्तेदार ने नशे में होकर सामने वाले एक दोस्त को उल्टी तलवार पीठ की ओर मार दी। ये तो गनीमत रही कि तलवार का हमला करते समय सामने वाले दोस्त को हमले की भनक लग गई और वह थोड़ा दूर हो गया जिसकी वजह से उल्टी तलवार की मार भी पीठ की और थोड़ी कम लगी जिसके कारण पीठ पर मामूली चोट ही तलवार के वार से आई। उक्त तलवार के हमले के बाद आपसी में और विवाद बढ़ गया और तीन-चार सामने वाले दोस्त ढाबा संचालक एवं उनके रिश्तेदारो को बड़ा सबक सिखाने की बात के साथ धमकी देकर आ गए।

एआई इमेज

तत्पश्चात तलवार के वार से मामूली जख्मी हुए व्यक्ति के साथ वाले दोस्तों ने अन्य अपने व्यक्तियों को भी घटना की जानकारी दी। जिसके बाद लिखित आवेदन देकर नामजद रिपोर्ट चौकी में दी। वहीं चर्चा है कि, लिखित आवेदन रिपोर्ट देने के साथ रिपोर्टकर्ता एवं साथियों ने पुलिस को कह दिया कि, साहब ढाबा संचालक व उसके रिश्तेदार अवैध शराब बेचने के साथ हमसे दादागिरी करते हैं और तलवार से हमला करते हैं, ऐसे में हम उन्हें सबक जरूर सिखाएंगे...! आप थोड़ी देर बाद ही बाजना मार्ग पर आना। जिसके बाद रिपोर्टकर्ता अपने साथियों के साथ ढाबे पर पहुंचे पर ढाबा बंद कर वहां से ढाबा संचालक व रिश्तेदार चला गया। जब इन युवकों को ढाबा बंद मिला तो वह ढाबा संचालक के बाजना मार्ग पर शासकीय शराब दुकान के समीप घर पर पहुंचे और आवेश में ढाबा संचालक, उसका वह रिश्तेदार जिसने तलवार से हमला किया के साथ अन्य एक भाई व एक अन्य ओर रिश्तेदार को भी युवकों ने जमकर पीटा।

उक्त मारपीट होने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और ऐसा दिखाने का प्रयास किया कि, घटना की जानकारी उन्हें अभी ही लगी है और पुलिस अपना ईमानदारी से कार्य कर रही है...! खैर पुलिस ने मार खाने वाले व्यक्तियों को भी चौकी ले गई और बात क्रॉस रिपोर्ट की हुई और दोनों ओर से रिपोर्ट दर्ज नहीं करवाने की बात के साथ मामला रफा-दफा हो गया।

आज तक कार्रवाई नहीं

खवासा क्षेत्र की बात करें तो खवासा सहित क्षेत्र में अवैध शराब का धंधा आबकारी व पुलिस के संरक्षण के साथ जमकर फल-फूल रहा है। यहां तक कि, एक ही व्यक्ति द्वारा अलग-अलग स्थान पर एक से अधिक अपने अवैध शराब के अड्डे संचालित किये जा रहे हैं। और आबकारी व पुलिस खाना पूर्ति के लिए जाते हैं और जो मिनिमम शराब के साथ केस बनाने हेतु अन्य व्यक्ति का नाम दे देता है उसका प्रकरण बनाने के साथ अपनी खानापूर्ति कर दी जाती है। वहीं जिस व्यक्ति के पास प्रकरण बनाने हेतु अन्य व्यक्ति का नाम नहीं होता है उस अवैध शराब विक्रेताओ से 15 से 20 हजार रुपए नगदी लेकर अपनी जेब की भरपाई भी कर ली जाती है।

वहीं क्षेत्र में शराब के साथ अब गांजा व अन्य ड्रग्स का भी सेवन दिन पर दिन बढ़ रहा है और युवा इसकी गिरफ्त में आ रहे हैं। गंजेडियों की बात करें तो यहां इनकी तादाद बड़ी संख्या में बढ़ती जा रही है। तय है इन गंजड़ियों तक गांजा पूरे सुलभ तरीके से पहुंच रहा है जिसका नतीजा ही यह है कि, गंजेडियों की तादाद बढ़ती ही जा रही है। लेकिन शराब के प्रकरण में खानापूर्ति करने वाली आबकारी व पुलिस ने आज तक कोई गांजा पकड़ने की कार्रवाई क्षेत्र में नहीं की है जो भी क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है।

चापलदा घाटी पर पथराव की घटना से बड़ी दहशत, लूटपाट की कोशिश नाकाम

माही की गूंज, बामनिया/पेटलावद।

मंगलवार की रात्रि लगभग दस बजे पेटलावद-बामनिया मार्ग के मध्य स्थित चापलदा घाटी कभी असामाजिक तत्वों ओर लूटपाट का क्षेत्र था। धीरे-धीरे यहां मार्ग के आसपास ग्रामीणों के बसने ओर यातायात के बढ़ते दबाओ के बीच इस क्षेत्र में लुट की वारदात में कमी आ गई। लेकिन एक बार फिर आपराधिक तत्वों ने यहां से गुजरने वाले वाहनों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। मंगलवार की रात्रि बामनिया निवासी जयेश सोलंकी अपने परिवार के साथ पेटलावद से लगभग रात्रि साढ़े 9 ओर 10 बजे के बीच लौटते समय उनके चार पहिया वाहन पर पथराव कर वाहन को रोकने का प्रयास किया। सूझबूझ दिखाते हुए वाहन चालक ने तेजी से वाहन वहा से निकाल लिया। पथराव के चलते वाहन को नुकसान भी हुआ।

चौकी पर दी सूचना के बाद सर्चिंग

वाहन लेकर चौकी बामनिया पहुंच कर पुलिस को घटना की सूचना दी गई। जिसके बाद बामनिया ओर पेटलावद की पुलिस ने पूरे मार्ग पर सर्चिंग करते हुए पुलिस वाहन से पेट्रोलिंग की। हालांकि पूर्व में पेटलावद ओर बामनिया पुलिस रात में पूरे मार्ग पर पेट्रोलिंग करते थे ओर पुलिस का एक वाहन रात में चापलदा घाटी पर खड़ा भी रहता है। लेकिन अपराधियों ने पुलिस को छकाते हुए वारदात करने की कोशिश की।

बड़ी वारदात का शिकार होने से बाल बाल बचे जयेश सोलंकी ने बताया कि, लूटपाट करने की नीयत से सड़क पर पत्थर जमा कर ओर पथराव कर वाहन रोक कर लूटपाट की कोशिश की गई। वाहन भगाने पर कुछ लोगों द्वारा पीछा भी किया गया। पथराव से वाहन में नुकसान हुआ है। पुलिस को इस मार्ग पर गश्त बढ़ाना चाहिए, रोड चालू है ओर लोग इस मार्ग से देर रात तक आना जाना करते है।

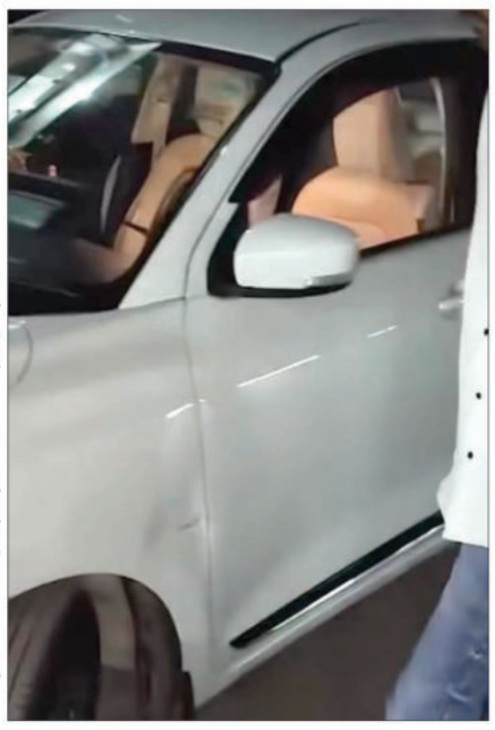

लड़कियों से बदसलूकी का वीडियो बनाकर वायरल करना पड़ा भारी, तीन आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज, बामनिया।

बामनिया-खवासा मार्ग पर गुजर रही लड़कियों के साथ मोटरसाइकिल सवार युवकों द्वारा बदसलूकी कर वीडियो बनाने और उसे सोशल मीडिया पर वायरल करने के मामले में पेटलावद पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार 21 सितंबर को घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। वीडियो में मोटरसाइकिल सवार युवक, लड़कियों के साथ बदसलूकी करते दिखाई दे रहे थे। मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक झाबुआ देवेंद्र पाटीदार के निर्देश पर थाना पेटलावद पुलिस को आरोपियों की पहचान कर कार्रवाई के निर्देश दिए गए।

पुलिस टीम ने वायरल वीडियो के आधार पर मोटरसाइकिल क्रमांक एमपी 45 एम टी 3398 की पहचान की। जांच में वाहन मालिक तथा संदिग्ध युवकों की जानकारी जुटाकर तीन आरोपियों को हिरासत में लिया गया। पूछताछ के बाद तीनों को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया।

शहर के तालाब हो रहे गंदगी का शिकार, नगरपालिका लगा रही नए जुगाड़

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसुरी

यूं तो झाबुआ शहर को झीलों का शहर कहा जा सकता है क्योंकि झाबुआ शहर के बीचो बीच लगभग पांच-छः तालाब मौजूद है। लेकिन विडम्बना यह कि, शहर के यह सभी तालाब नगरपालिका के निकम्मेपन और भ्रष्टाचार की गर्त में डूब जाने के चलते कुड़ादान बनते नजर आ रहे है। हालांकि इन तालाबों के सौंदर्यीकरण को लेकर सरकारों ने करोड़ों रुपए आवंटित किए थे। लेकिन झाबुआ नगरपालिका में बैठे बागड़बिल्लों की भ्रष्ट कार्यप्रणाली की बदोलत इन तालाबों का सौंदर्यीकरण भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया।

वर्तमान में झाबुआ शहर में मौजूद लगभग सभी तालाब गंदगी का शिकार होते नजर आ रहे है। इन तालाबों में से अधिकतर में खुद नगरपालिका ने ही शहर के कई इलाकों का ड्रेनेज छोड़ रखा है। जिससे कई मोहल्लों, बस्तियों और कॉलोनियों की गंदगी इन तालाबों में जाकर मिल रही है। सीधे तौर पर यह कहा जा सकता है कि, शहर के साफ तालाबों में गंदगी फैलाने की मुख्य जनक खुद नगरपालिका ही है। हालांकि जवाबदेही को टल्ला मारते हुए यह कहा जा सकता है कि, यह पिछली परिषदों में हुआ है, लेकिन वर्तमान परिषद इतना भर कह लेने से पल्ला नहीं झाड़ सकती। क्योंकि वर्तमान परिषद को भी नगरपालिका में बैठे लगभग 4 वर्ष हो चुके है।

पिछले चार वर्षों की ही बात करें तो काम के नाम पर महज एक बहादुर सागर तालाब ही है जहां काम हुआ है। इसके अलावा शहर के लगभग सभी तालाब गंदगी, बदबू और बीमारियों का कारण बनते नजर आ रहे है। हालांकि बहादुर सागर तालाब में भी ड्रेनेज का पानी मिलता है, लेकिन नगरपालिका शहर के इन तालाबों में मिलने वाले ड्रेनेज को रोक पाने में असमर्थ दिखाई दे रही है।

शहर का छोटा तालाब इन दिनों शहर के सबसे दूषित तालाबों में से एक बन गया है। इस तालाब में शहर के एक बड़े क्षेत्र का ड्रेनेज समा रहा है। गंदगी इतनी कि कोई आम व्यक्ति इस तालाब में हाथ डालने की भी इच्छा ना करे। एक समय ऐसा था जब यही छोटा तालाब शहर की सुंदरता को चार चांद लगाता दिखाई देता था। सज्जन रोड से गुजरने वाले हर व्यक्ति को इसका मनमोहक नजारा आनंदित कर देता था। मगर विकास के नाम पर हुए खेल ने इस सुंदर तालाब को भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा दिया। इस तालाब के सौंदर्यीकरण के नाम पर करोड़ों के भ्रष्टाचार को अंजाम दे दिया गया और इसे सुंदर बनाने की बजाय गंदगी के दलदल में तब्दील कर दिया गया।

शहर के छोटे तालाब मे भरी पड़ी है गंदगी, नगरपालिका की लापरवाही का खामियाजा भुगत रहे शहरवासी

मत्स्य विभाग के तालाब की स्थिति भी छोटे तालाब जैसी ही। नगर के बड़ी आबादी का ड्रेनेज मिलता है तालाब में।

वर्तमान स्थिति यह है कि, अब इस तालाब के किनारे से गुजरने वाले सज्जन रोड से लोग इस तालाब की तरफ नजर घुमाना भी उचित नहीं समझते, बल्कि गर्मी के दिनों में तो इसकी दुर्गंध से लोगों को अपनी नाक ढंक कर इस रोड से निकलना पड़ता है। विडम्बना यह कि, इस तालाब के किनारे पर ही वर्तमान नगरपालिका परिषद ने एक बोर्ड लगा रखा है जिसमें गंदगी फैलाने पर जुर्माने का विवरण है। मगर इसी बोर्ड के आसपास गंदगी की भरमार रहती है। वर्तमान में अगर तालाब के किनारे का निरीक्षण करना हो तो यह बड़ी ही हिम्मत का काम लगने लगा है। क्योंकि जहां तक इंसानी कदमों की पहुंच है वहां तक लोगों ने शौच और गंदगी फैला रखी है। छोटा तालाब क्षेत्र में नगरपालिका द्वारा किसी तरह का शौचलय या मुत्रालय नहीं बना रखा है। नतीजा यह है कि, चलते फिरते लोग मुंह उठाकर छोटे तालाब की तरफ शंका या लघुशंका के लिए खड़े हो जाते है। रही बात नगरपालिका द्वारा लगाए गए जुर्माने के बोर्ड की तो वह सिर्फ अब एक लोहे का बोर्ड मात्र ही है। लोग यहां निश्चिंत होकर हल्के होते है। क्योंकि ना कोई देखने वाला, ना कोई बोलने वाला और नगरपालिका के आर्थिक दंड का डर ठेंगे पर।

वर्षा ऋतु का दौर लगभग समाप्त हो चुका है और अब क्वार माह की तेज धूप इन तालाबों को तपाने लगेगी। अब कुछ ही समय बाद इसी धूप और गर्मी के कारण इस दुषित छोटे तालाब से भयंकर गंदी बदबू उठने लगेगी और लोग इससे खासे परेशान दिखाई देंगे। हालांकि करोड़ों के भ्रष्टाचार के बावजूद हर साल नगरपालिका इसमें औपचारिक तौर पर फव्वारे लगाती है ताकि पानी में लहरे बनती रहे और तालाब थोड़ा साफ दिखाई दे। मगर नगरपालिका के यह प्रयास इस तालाब का स्वच्छ व सुंदर बनाने की दिशा में उंट के मुंह में जीरा ही साबित होता आया है। क्योंकि महज फव्वारे लगा देने से किसी भी विज्ञान के तहत पानी साफ नहीं हो सकता। वर्तमान में शहर के तालाबों को स्वच्छ व साफ रखने के लिए नगरपालिका के पास कोई कार्य योजना नहीं है। ना ही नगरपालिका परिषद ने इस मुद्दे को अपनी बैठकों और सम्मेलनों में जगह दी है। तो यह तय है कि इन बदबूदार तालाबों को झाबुआ की जनता को अभी और सहना होगा।

यही स्थिति झाबुआ शहर के मेहताजी तालाब और मतस्य विभाग के तालाब की भी है। मगर नगरपालिका की वर्तमान परिषद इन तालाबों की तरफ देखना तो ठीक इनके बारे में सोचना तक उचित नहीं समझ रही है। वर्तमान में नगरपालिका, शहर में पड़े अति महत्वपूर्ण कार्यों को छोड़कर मलाईदार कार्यों को निपटाने में लगी है। हालांकि यह समय के गर्भ में है कि नगरपालिका और वर्तमान परिषद को इसमें कितनी मलाई खाने को मिलती है। क्योंकि स्थितियां यह बता रही है कि, जब-जब नगरपालिका परिषद ने मलाई खाने की योजना बनाई है तब-तब मलाईदार काम अधर में ही अटक गए है। उदाहरण के लिए शहर का लिंक रोड जिसे नगरपालिका में बैठे भामाशाह मलाईदार हंडी समझ रहे थे वह अब अधर में है। इसी तरह शहर की धर्मशाला-कॉम्प्लेक्स जिसे पीपीपी मोड पर नवनिर्माण के नाम पर गिराया गया। और कई लोगों के रोजगार पर लात मार दी गई सिर्फ इसलिए कि थोड़ी बहुत मलाई खाने को मिलेगी, लेकिन अब यह भी अधर में ही दिखाई दे रहा है।

इन कामों के अधर में अटकने की वजह और कहानी अलग ही विषय है। ऐसे और भी बहुत से काम है जो मलाई खाने के चक्कर में अधर में अटके पड़े है और मूलभूत कार्यो की तरफ नगरपालिका परिषद का ध्यान नही है, क्योकि यहां कोई मलाई वलाई नहीं है सिर्फ और सिर्फ गंदगी ही गंदगी है। हालांकि नगर के एक मात्र बालोद्यान और बहादुर सागर तालाब पर भी अब नगरपालिका की नजरें है जहां मलाई दिखाई दे रही है। अब नगरपालिका इन्हे बीओटी मोड पर देने की तैयारी में है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422